Chapter-4

==

:: चतुर्थ अध्याय ::

:: शब्द – विचार -1 ::

==

:: चतुर्थ अध्याय ::

:: शब्द-विचार - {एक} ::

4.00 : प्रास्ताविक :

सार्थकता की दृष्टि से "शब्द" भाषा की सर्वाधिक छोटी ईकाई है । वैसे तो शब्द के उच्चारण मात्र से श्रोता के मस्तिष्क में किसी आकृति या प्रतीक का बोध होने लगता है । शब्द यदि भाववाचक संज्ञा हो तो पारंपरिक संस्कारगत सौन्दर्य-बोध के द्वारा उसके मन में कोई भाव-लहरी आकार ग्रहण करती है । प्रायः किसी शब्द को सुनकर या पढ़कर जो बोध होता है , वह तो उसके कोशगत अर्थ से ही सम्बद्ध होता है । परंतु कई बार शब्द की लक्षणा और व्यंजना शक्तियों के कारण शब्द के कोशगत अर्थों से भिन्न ऐसे अर्थ भी द्योतित होते हैं । उदाहरणतया यदि वास्तव में किसी गधे के सम्बन्ध में कहा जाय कि "गधा जा रहा है " तो उसमें निहित "गधा"

शब्द का अर्थ एक पशु-विशेष होगा । परन्तु यदि किसी व्यक्ति को संकेतित करते हुए कहा जाय , तो उसका अर्थ लक्षणा शब्द-शक्ति द्वारा "मूर्ख" ऐसा होगा । अब यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे को कहे कि तुम गधे हो , और सुननेवाला उसके प्रत्युत्तर में कहे कि " अजी साहब , मैं तो आईना हूं " ; तो शब्द की व्यंजना-शक्ति के द्वारा उसका अर्थघटन यों होगा कि "साहब, गधा मैं नहीं , बल्कि आप हैं । "

साहित्यकार को "शब्दस्वामी" कहा जाता है । कवि की वाणी को मेघगर्जना कहा गया है ।[1] और अपनी व्यापकतम परिभाषा में उपन्यासकार भी कवि के व्यापार-क्षेत्र में ही आ जाता है । रीतिकाल के कवि देव ने शब्द के महत्व को रेखांकित करते हुए उसे काव्यात्मा बताया था -- " शब्द जीव तीहि अरथ मन रसमय सुजस शरीर "[2] । मेरे निर्दे-शक डा. पारूकांत देसाई ने शब्दजीवी साहित्यकार तथा समाज के अन्य क्षेत्र के लोगों के बीच विभाजक-रेखा खींचते हुए अन्य लोगों को अंकों के व्यक्ति और साहित्यकार को "शब्दों का आदमी" कहा है -- " तू तू है , मैं मैं हूं ; पर फरक है लाजमी / बस तू अंकों का , मैं शब्दों का आदमी । "[3] और शब्द बनते हैं अक्षर से । अक्षर जिनका नाश नहीं होता । इसलिए तो कबीर कहते हैं -- " हम न मरी हैं, मरी हैं संसारा । "[4]

उपन्यासकार का वास्ता भी शब्द से ही है । मुखबोलन्ती भाषा से उसका विशेष सरोकार है । शिवानीजी के उपन्यासों में यह "शब्द" किस प्रकार आया है , उसका अध्ययन इस अध्याय तथा आगामी पंचम अध्याय में होगा । इस अध्याय में शब्द से संपृक्त कतिपय आयामों को लिया जायेगा । शेष आयामों की चर्चा पंचम अध्याय में होगी ।

4.01 : विविध भाषाओं के शब्द :

कबीर जो भाषा को बहता नीर कहते हैं , बिलकुल सही है । भाषा निरंतर बदलती रहती है । भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया

जाय तो यह भाषा का विकास है । वैयाकरणी या भाषागत शुद्धता के पक्षपाती उसे भाषागत पतन भी मान सकते हैं । "चन्द्र" से चांद या "आदित्य" से "इत" , "उपाध्याय" से "ओझा" या "झा" ये सब परिवर्तन भाषाविज्ञान की दृष्टि में स्वाभाविक एवं भाषा के विकास के द्योतक हैं । यह एक सर्वस्वीकृत तथ्य हैं कि आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास संस्कृत से हुआ है । हिन्दी भी उनमें से एक हैं । अतः अन्य भारतीय भाषाओं की तरह हिन्दी की शब्द-संपदा में भी संस्कृत शब्दों की बहुलता मिलती है और शिवानीजी की भाषा तो संस्कृत-परिनिष्ठित होने के कारण उसमें और भी अधिक संस्कृत के शब्द मिलते हैं ।

संस्कृत-शब्द :

ऊपर निर्दिष्ट किया गया है कि शिवानीजी की भाषा में संस्कृत-बहुलता परिलक्षित होती है । यहां उनके कतिपय उपन्यासों से ऐसे संस्कृत शब्दों को लिया गया है जो विशिष्ट हैं । अन्यथा हमारे दैनंदिन जीवन में ही हम अनेक संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं और जन-सामान्य को उसका ज्ञान तक नहीं होता कि यह संस्कृत शब्द है , जैसे — नदी , रवि , चन्द्र , पृथ्वी , भूमि , अन्न , ग्रंथ , कन्या , पुत्र , पुत्री , दिवस , दिन , वृक्ष , कवि , ऋषि आदि आदि । यहां कुछ विशिष्ट शब्दों को रखने का उपक्रम है ।

कृष्णकली : वृष्टि , आसन्नप्रसवा , पद्म , महाकुत्सित , प्रासाद , मृतवत्सा , चेष्टा , प्रत्यागमन , नतमुख , दंतपंक्ति , माधोत्सव, भृत्य , षटपद , वीतयौवना , [redacted] रुग्णा , स्मृति-गह्वर , दिवंगता, दस्युकन्या , प्रस्तरमूर्ति , तन्वी , विद्युत-वह्नि , प्रपितामह , श्यामातुलम्बर, मुखरा ग्राम्या , अभियुक्त , गगनचारिणी , नितम्बिनी , वासर , नत-जानु , अशौच , विवस्त्रावस्था , गृहदस्यु , अनुजवधू , भिष्टदंत , सौर-गृह , दुर्दिनाभिसारिका , कौशलाभिमानिनी , विस्मित-भावा , गैरिक-वसन , श्वसुरकुल , सद्यः विवाहित , आकस्मिक औदार्य । [5]

चौदह फेरे : उत्तुंग सौंध , अट्टालिका , गुहाद्वार , प्रकोष्ठ , लक्षण-शिल्पकला , विवेक-स्तम्भ , वर्षफल , जातिच्युत , वाग्दान , वज्रमूर्खा , प्रतिवेशिनी , उत्कोच , उपालंभ , निर्लज्ज दुराचारिणी , अर्धमीलित नयन , आभूषणविहीना , घनीभूत विषाद , काशीवासिनी गृहपरित्यक्ता, शस्यश्यामला बंगभूमि , परिवेशन , चक्षुदोष , भ्रमरावलि , अलसमना, वृषभ-स्कन्ध , शाखोच्चार , तृषाक्रान्ता , स्तुतिजपार्चन वंदना , सूचि-भेद्य अंधकार , आख्योपन्यास , प्रशस्त ललाट , देहयष्टि , सुचिक्कन केश , दौर्बल्य , अस्तप्राय , प्रत्यावर्तन , लौह-स्तम्भ । 6

भैरवी : अश्वत्थ , छिटका चाँदनी , हास्योज्ज्वल , कृपण वातायन ,
निर्वात दीप , अप्रत्याशित झोंका , कदली-ग्रास , महाकुत्सित, कपाल कुण्डला , आसन्नप्राय , स्तूपीकृत , वैधव्यरिपु , रूपशलाका, लावण्यमंडिता , शाखामृग , आक्लांत पथिक , पोषिता पत्नी , चिन्तातुरा, मतिभ्रमावस्था , शिला-वृष्टि , नीरस तरुवर विलसति पुरतः , कार्पण्य , औदार्य , अत्याधुनिकता , श्रृंगारप्रियता, प्राक्तन छात्र , नित्य-प्रयोजन, वाग्दान , वनस्पति घृत , मरीचिका , द्विरागमन , हिमभूधर , दस्यु-कन्या , कर्कशा ग्राम्याएं , स्मरांधा नायिका , भवजलधिरत्न, आगत भर्त्तिका , पाटल-प्रसून । 7

विषकन्या : अनभिज्ञ , प्रश्रय , भृत्यहीन , दिगदिगंत , गगनांग ,
ईर्ष्याग्नि , सहोदरा , गल्प-गुच्छ । 8

माणिक : पाटल-प्रसून , आगंतुका , आत्मिया , अवकाश-प्राप्त ,
शिलोच्चय , मधुमेह , उच्च रक्तचाप , आवास-सज्जा , अतिथि-कक्ष , शयन-कक्ष , मूर्ति-तस्कर-दल , अभिज्ञाता , औद्धत्य-रंग । 9

तर्पण : प्रशंसार्च्य , निर्झरिणी , मुक्ताक्षर , स्वर्गादपि गरियसी , संरक्षिका , पार्श्व , ग्रामाकाश , पंचशर , पार्श्व-परिवर्तन , प्रेत-~~xxxx~~ शय्या , नतजानु , ताम्रतेज , अष्टभुजा । 10

जोकर : संगीतानुष्ठान , रवीन्द्रालय , पृथुल , श्राप-सुख , मृत्तिका-पात्र , देह-यष्टि , कण्ठामृत । 11

लेखिका ने कहीं-कहीं भाषा में अति-प्रचलित स्वाभाविक शब्दों के स्थान पर उनके संस्कृत पर्यायों का प्रयोग किया है, जैसे प्रतिवेशिनी {पड़ोसन}, परिवेशन {परोसना}, उत्कोच {रिश्वत}, भृत्य { नौकर, सेवक}, रुग्णा {बीमार}, वसन {वस्त्र}, षटपद {भंवरा}, सौरगृह {प्रसूतिगृह}, अनुजवधू {भाभी} आदि आदि। ऐसी भाषा कभी-कभी खटकती है और पाठक को लगता है कि वह हिन्दी पढ़ रहा है या संस्कृत।

कहीं-कहीं लेखिका ने संस्कृत एवं अंग्रेजी शब्दों का संयोजन किया है। "द्रुतगामी स्पीड", "एल्यूसिव व्यक्तित्व", "सिनिकल रूक्तित्व" आदि ऐसे ही शब्द हैं। कहीं-कहीं लेखिका ने प्रचलित शब्दों के स्थान पर सार्थक नवीन संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी किया है, जैसे "गायिका" को "स्वरलयनटिनी" कहना। अभिप्राय यह कि शिवानीजी के उपन्यासों में हमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा डा. भगवतीशरण मिश्र की भांति संस्कृत शब्दों का प्रयोग बहुलता से उपलब्ध होता है। उनकी यह गद्य-शैली कहीं-कहीं प्रसादजी की गद्य-शैली की स्मृति कराती है।

<u>अरबी-फारसी तथा उर्दू के शब्द</u> : हमारे यहां बारहवीं शताब्दि से लगभग अठारहवीं शताब्दि तक मुसलमानों का शासन रहा, अतः अरबी-फारसी, तथा इसके साथ यहां की भाषाओं के मेल से बनी उर्दू के शब्दों का हमारी शब्द-संपदा में शामिल हो जाना स्वाभाविक ही माना जायेगा। हमारी रोजमर्रा की भाषा में कई ऐसे शब्द जो इस मूल के हैं प्रयुक्त होते हैं और कई बार हमें इसका पता तक नहीं चलता। यहां पर भी ऐसे अतिप्रचलित शब्दों को न देकर कुछ विशिष्ट शब्दों को देने का प्रयत्न किया है।

पेशवाज़, हमजोली, मुसाहिब, हमाम, तगड़ी तनख्वाह, हमजुल्फ {साढू}, किरिस्तान, बन्नेमियां, तावड़तोब, धपलाबाजी ;[12] बावर्चीखाना, बीबी, कैफियत, फूहड़, अहमक, हिजड़ा, बदशक्ल,

मुसलमानिन , गुसलखाना , चांदमारी , नौशा , बजाय , अर्जीनवीस , गोश्त , बोटी , तफरी , खरीद-फरोख्त , खानसामा , मुर्गमुसल्लम , नमकीन ; [13]तकल्लुफ , नासपीटा , खबिश , मुर्दनी , उजड़ा दयार , खानसामिन , जनखा , मुश्क , मुआवजा , अर्जीनवीस , ऐबी । [14] मौलूद , शर्तनामा , पानदान , नौशा {दुल्हा} , पेशवाज़ , बदअभ्यास, फिलखाना ; [15] नकली , बशीरहाट , नदारद , नौशा , जर्दा-किमाम, नालीशा , किस्सागोई , तुनुकमिजाजी , उठावगीर बेब , तेज़तर्रार , दस्तरखान ; [16] सरदर्द , अतलसी कमीज़ , रण्डी , खसम , अकाया-बकाया , बखत , मनहूस , नासपीटा , खनसामिन , जचगी , जनखा, तामचीनी, अर्जीनवीस , तोहफा ।[17]

शिवानीजी ने इन शब्दों का प्रयोग चरित्र एवं परिवेश को ध्यान में रखकर किया है । कहीं-कहीं उर्दू-संस्कृत शब्दों का मेल भी किया है , जैसे मनहूस स्मृति या बदअभ्यास ।

अंग्रेजी के शब्द : अंग्रेजों का शासन हमारे देश में दो सौ-ढाई सौ वर्ष रहा । दूसरे हमारे यहाँ उच्च-शिक्षा प्रायः अंग्रेजी में दी जाती है । प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए भी कई अंग्रेजी माध्यम के स्कूल पाए जाते हैं ।ज्ञान-विज्ञान का आविष्कार प्रायः पश्चिम में हुआ । अतः उससे सम्बद्ध शब्द भी अंग्रेजी में ही पाए जायेंगे । दूसरे शिवानीजी के उपन्यासों में अहल्या , कली आदि नायिकाएं कान्वेण्ट स्कूलों में पढ़ी हैं । अतः उनके उपन्यासों में अंग्रेजी शब्द बहुतायत से मिलते हैं । बल्कि संस्कृत के बाद अंग्रेजी शब्द ही अधिक मिलते हैं । ~~यहाँ×भी×अतिप्रचलित×शब्दों×को×न×देकर×~~ कहीं-कहीं तो पूरे-के-पूरे वाक्य या परिच्छेद भी अंग्रेजी में मिलते हैं । यहाँ भी अतिप्रचलित शब्दों को न देकर कुछ विशिष्ट शब्दों को ही दिया गया है ।

रोजरी , आर्थराईटिस , हिस्टिरिकल , पिगस्टीकिंग पार्टी, स्वीज गवर्नेस , केन्टोन्मेण्ट , डक शूटिंग , इजिप्शियन ममी , इण्टरेस्टिंग

मैटेनी , स्लीपिंग सेण्टर , माईल-स्टोन , फ्लाइंग किस , टीन-एजर, डारमेटरी , नन्स , कोरीडार , क्रिडेन्शियल्स , क्रिश्चियन रिजोल्यूशन, कोर्सेट , हिप्नोटाईज्ड , फ्लर्टिंग , अनसोफेस्टिकेटेड , स्केटिंग-व्हिल्स , एम्बरेसिंग , कोम्प्लीमेण्ट , इण्डियन पेवेलियन , कोमन-कर्टसी , रिसेपनिस्ट , एम्बेसी , डिप्लोमेट , शैम्पेन , वोडका , हाईब्रिड , किडनेप , शेपलेस , एडिक्ट , कोस्मेटिक्स , ब्रुअरी [शराब की फेक्टरी का व्यवसाय] , टेनेण्ट , एल.एस.डी. , काकटेल , प्रिवीपर्स , सैंसिटीव , सिफोन , ज्योर्जेट , इम्पोर्टेड , फोटोजेनिक , गेस्ट्रोएण्टाईटिस , इडियट , कोर्टशिप , वेडिंग-प्रेजेण्ट , आई.पी.एस. , विजिलेन्स कमीशन , वेस्ट-लाईन , रीक्रूटमेण्ट-सेण्टर , अण्डर-नरिश्ड , कनफेशन , क्रिमिनल लायर , एप्रूवल , न्यूसेन्स -वेल्यू , पेशन्स , इनट्युशन , बीफ , फैन्सिंग , सिंकिंग , पल्स , आलमोस्ट , सिमेट्री, मार्बल टोप ।[18] मोज़ेइक , ब्लेजर , ब्यूक [गाड़ी का नाम] , स्वीमिंग, युडिकोलोन , इनवैलिड चेयर , एंग्लोइंडियन नर्स , ड्राफ्ट्स , स्टेनो , स्टर्ड , पोइण्टेड टो , ड्राय जीन , ड्राय मार्टिनी , पेन्सिल-स्केच , एक्सक्लुसिव एग्जिस्टन्स , रोस्ट मुर्ग , ड्रेस्डन चायना , नीट जीन , स्क्वैड्रन लीडर , ग्लेडोलाई , इन्टीरियर , परक्युलेटर , डनलप की मैट्रेस , क्रीम क्रेकर , सोल्टेड फिश , सिम्फनी , ड्रोल , ब्लौण्ड , ब्रुनेट , नीग्रोस , स्वीस , फ्रेंच , कैनेडियन , इटालियन , रोप-ट्रीक , लीफलेट , स्ट्रोबेरी , क्रेडेन्शियल्स , एक्सेंट , अपसेट , कम्पीटीशन , नाईटी , बोस्की का पेटिकोट , पोस्टेड , इनफेण्ट्री , सिली चाइल्ड , हनीमूनर , प्राकृतिक एवन्यू , ओर्चर्ड , मैनीक्युरर्ड नाखुन , जस्ट ए स्लीप आफ टंग , डोक्युमेण्टरी , स्कैण्डल , अफेयर , सार्डिन मछली , फ्रस्ट्रेटेड ओल्ड मेड्स , ब्रिगेडियर , मदर प्रोविंशियल , रिडिक्युलस , प्युरिटन , रिसेप्शनिस्ट , प्रिमरोज की बेल , सण्डी स्पेशल , थ्री इन वन , आरफनेज , डोरमेटरी , आर्थराइटिस , मैं "वेज़" हूँ , मैं "नोन-वेज़" हूँ , ब्रीफकेसनुमा बटुआ , विल यू प्लीज कीप क्वायेट , पेराक्साइड से डाई करना , लोलिटा , नाइलोन कार्डिगन , वेरामून ,

जस्ट ए टीनी वीनी फ्लैट , लैण्डलेडी , हाउ स्विट आफ हर , मोनोग्राम, सनब्रेकर , अनटाइडी , माय पुअर स्विट , वी मस्ट सेलिब्रेट , कोर्ट शु , रोजरी , एक्सेंट ,इण्टीरियर , गैस्ट्रो-एण्टेराइटिस , क्रिमेशन घाट , क्रोस ब्रिड , हूवर {वोशिंग मशीन} , मेग्निफाइंग ग्लास , न्यू पिंच , हिस्टीरिकल सपने , इनफरमरी , मोनोग्राम , बी अवेयर आफ डोग्स , एल्सेशियन , सिफोन जोर्जेट सिल्की साड़ी , इंगेजमेण्ट रिंग , बिलीयर्ड टेबल , स्टड का सेट , एम्बेसी , डिप्लोमेट आदमी , गोल्ड कन्ट्रोल , टेराकोटा , स्प्रेवर्क , लिंग्विस्ट ।[19]

इस प्रकार उनके प्रायः सभी उपन्यासों में अंग्रेजी के शब्दों की बहुतायत होती है । कहीं-कहीं उन्होंने हिन्दी शब्दों तथा प्रत्ययों के साथ भी अंग्रेजी शब्दों का सुंदर मेल किया है । " हिस्टिरिकल आँखें," "सिनिकल व्यक्तित्व " , "खाँसी का सिग्नल " , "फैन्सिंग पैंतरेबाज" , प्राकृतिक एवेन्यू " , बोस्को का पेटिकोट" , " डिप्लोमेट आदमी" , "हिस्टिरिकल सपने" , "ब्रीफकेसनुमा बटुआ" जैसे शब्दों में हम उनकी इस प्रवृत्ति को लक्षित कर सकते हैं ।

4.02 : अन्य भाषा तथा बोलियों के शब्द :

शिवानीजी के उपन्यासों में बंगला , गुजराती , पंजाबी , मराठी इत्यादि भाषाओं के शब्द मिलते हैं ; परंतु यहां भी बंगला भाषा के शब्द विशेषतया पाये जाते हैं । उसी प्रकार बोलियों में कुमाऊंनी , ब्रज, अवधी आदि के शब्द पाये जाते हैं ; परंतु इनमें आधिक्य तो कुमाऊंनी बोली के शब्दों का है ।

बंगला भाषा के शब्द : संस्कृत तथा अंग्रेजी शब्दों की भांति शिवानीजी में बंगला के शब्द भी बहुत मिलते हैं । शिवानीजी का बंगाल से सविशेष संबंध व लगाव रहा है । अतः उनके कई पात्र बंगलाभाषी होते हैं या बंगलाभाषी लोगों से सम्बद्ध होते हैं । फलतः अनेक स्थानों पर तो बंगला के पूरे के पूरे वाक्य मिलते हैं । "कृष्णकली" , "चौदह फेरे"

"कृष्णवेणी" , "जोकर" , "कालिन्दी" , "श्मशान चम्पा" आदि उनके ऐसे उपन्यास हैं जिनमें बंगला-परिवेश के कारण इस भाषा के शब्द पाये जाते हैं । यहां उनमें से कुछ शब्दों को देने का उपक्रम है ।

ब्राह्मोत्सव , माधोत्सव , निमाई [चैतन्य महाप्रभु को बंगाल के लोग प्रायः निमाई कहते हैं ।] , खांटी बांगाली छेले जन्मे छे तोमार मां [निखालिस बंगाली लड़का पैदा हुआ है तुम्हारे मां] , गोजेन [गजेन्द्र] , केमोन [कैसा] , जामाई पेयेछी [दामाद मिला है] , आहा बुक जुड़िये गेली मां लोक्खी [आहा , छाती ठण्डी हो गई मां लक्ष्मी], की है जामाई बाबू , बांगला शीखते पारले ना ? [क्यों हे जमाई बाबू, बंगला नहीं सीख सके क्या ?] , बीबी [बंगाल में असाधारण सुंदरी को "बीबी" कहते हैं , वैसे हिन्दी क्षेत्रों में तथा कुमाऊं प्रदेश में बीबी ननद को कहा जाता है ।] , आहा की ठण्डा छेले [अहा कैसा ठण्डा पुत्र है] , "काग्रेसेर धप्पाबाजी चलबे ना , चलबे ना " ; "संयुक्त दल होलो विफल " , "भालो होबेना बोलछी" [देखिए , मैं कहती हूं , अच्छा नहीं होगा] , "ओहे पाण्डे , एक टु मिष्टो दाओ देखी [अरे पांडे , जरा मिठाई बढ़ाना इधर] ; " जा बेयेछी" [जमकर खाया है] ; " ओहे पांडे , आमो एखोन तोर बंगलियाय गिये एकटू शोबो बूझली " [अरे पांडे , अब मैं तेरी बंगलिया में जाकर सोऊंगा — समझा ?] ; गायेर लोक , कालो काजल मेघ , तमाल बने , हरिण चोख, आमार कालो चांद ।[20] "अद्दैरे " बड़ो भोरे जे दिदीमनी , मां तो हाटे गेछेन " [बड़ी जल्दी आ गयी दीदीमनी , मां तो हाट गयी है], रोहू [मछली का एक प्रकार] , माशी [मौसी] , बूझली [समझीं] , खुकुमनी , मुदमयी [आनंदमयी] , "आहा , केमोन मानिये छे आमार प्रतिमा के " [आहा , कैसी जंच रही है मेरी प्रतिमा] , नामेर , "तोमरा बोशो , आमी देखछीं गिये [तुम लोग बैठो , मैं देखती हूं], चेष्टा [उन्होंने चेष्टा करके दिलवा दी — यह बंगला प्रभाव है] , दीदीमनी लोक्खीटी [लक्ष्मीबहन] , मोटा गुस्सा [यह भी बंगला प्रभाव है] , संदेश [बंगला मिठाई] , काकाबाबू , भयान्धकार ,

स्पंज रसगुल्ले । [21]

उनके अन्य उपन्यासों में भी बंगला के शब्दों की खूब भरमार है । वस्तुतः लेखिका ने केवल करने खातिर या अपना बंगला-ज्ञान छांटने के लिए इन शब्दों और वाक्यों का प्रयोग नहीं किया है, प्रत्युत इसके द्वारा वे एक यथार्थ एवं विश्वसनीय परिवेश एवं चरित्र को सृष्टकरना चाहती रही हैं ।

प्रथम अध्याय में निर्दिष्ट किया गया है कि शिवानीजी गुजरात में भी कुछ समय रही हैं । उनकी माताजी गुजराती साहित्य की मर्मज्ञ थीं और उनके घर में गुजराती के तत्कालीन शीर्षस्थ साहित्यकारों की उत्तमोत्तम रचनाएं रहती थीं जिनमें से कुछेक को पढ़ने का मौका भी उन्हें मिला है । अतः उनके उपन्यासों में कहीं-कहीं गुजराती शब्द पाए जाते हैं । उनके उपन्यास "रतिविलास" में तो लेखिका ने करसनदास भीगीदास कापड़िया नामक एक गुजराती व्यापारी के चरित्र को उद्घाटित किया है । उनकी पुत्रवधू भी गुजराती है । अतः गुजराती शब्दों का प्रयोग वहां मिलता है । दूसरे डा. ग्रियर्सन ने भी पंजाबी, राजस्थानी तथा पहाड़ी भाषाओं को गुजराती से तुलनीय माना है । [22] शिवानी के उपन्यासों में प्रायः पहाड़ी परिवेश पाया जाता है और कुमाऊंनी भाषा में ऐसे असंख्य शब्द हैं जो गुजराती के कई शब्दों से मिलते-जुलते हैं । डा. सलीम व्होरा ने अपने शोध-प्रबंध में ऐसे कई शब्दों को खोज निकाला है जो गुजराती और कुमाऊंनी में समान रूप से पाये जाते हैं । ******** सुविधा की दृष्टि से यहां गुजराती शब्दों को कोष्ठक में रखा गया है । डा. व्होरा ने तो ऐसे सैंकड़ो शब्द दिये हैं । यहां हम केवल उदाहरण के रूप में कुछेक शब्दों का ही उल्लेख कर रहे हैं —

छौ /छे/, पैलाग /पायलागुं/, चौफेर / चोफेर/, दाज्यू /दाजी/, जेठाणी /जेठानी/, मयेडी /माडी/, जगरिया /जागरिया/, जागर/जागर/, असोज के नौर्ते / असाडनां नोरतां /, दातुली /दातरडी/, बेत /वेतर — गाय या भैंस जितनी बार ब्या चुकी हो उसे

कुमाउंनी में बैत और गुजराती में वेतर कहते हैं / , खातड़ी /खाटली/ , तौली /तपेली/ ,उखेलना /उखेडवुं/ , बौराणी /बहुरानी/ , पराल /परार/, भात /भात — चावल के अर्थ में , अन्यथा "भात" शब्द का अर्थ हिन्दी में वह चढ़ावा होता है जो भाई बहन के यहां बहन के पुत्र-पुत्रियों की शादी के समय चढ़ाता है । / ऐसे तो अनेकों शब्द डा. व्होरा ने दिए हैं ।[23]

अभिप्राय यह कि गुजराती और कुमाउंनी की इस समानता के कारण भी कई ऐसे शब्द यहां मिलते हैं । यहां यह तथ्य ध्यातव्य रहे कि हिन्दी तथा गुजराती में ऐसे हजारों शब्द है जो मूल संस्कृत के होने के कारण समान प्रकार के हैं । यहां ऐसे संस्कृत तत्सम शब्दों को नहीं लिया गया है ।

साच्छात , झमेला /झबलुं/ , छोकरी , परेत , थोरा धकेलेगा /थोडुं धकेलशे/ , रांड , छठ्ठी , धप्पाबाजी /धपलाबाजी/ , ताबड़-तोब , मुसल्ला , ~~xxxxxxxxxx~~ लम्ब-लडंग , धिंगडी , माझी ;[24] खम्भा , बिरावल /वेरावल/ , नौशा , वर्षफल /वर्षफळ/ , अवेर /अवेर/ , पंचक , भड़ास , हिजड़ा , वाउचर , जोगाड़ /जुगाड़/ , माशी , चुगद , मुलहठी /मुलेठी/ , नौशा , फानस /फानस/ , रेजगारी , काकी , शिंगाड़े /शिंगोडा/ , पोटली ; [25]पाहुना , लुगाई , गुच्छा ; [26] गमला , मधुमेह, लज्जा , उच्च रक्तचाप ,जीजी ; [27] भतार /भरतार/ , छोगा , सूतक, धमाचौकड़ी , ओड , रांड , इनाम-विनाम; [28] खंजडी , बालना, भौजी /भौजाई/ , डागरा । [29] बल्लियां /वळियो/ , पोतडी , नौशा, टैट , झूमती , शर्तनामा /शरतनामुं/ , झाड़-झूड़कर , संडासी /साणसी/ , बेल /वेल/ , बल्द /बळद/ , दाज्यू /दाजी/ । [30]

अभिप्राय यह कि लेखिका की भाषा में कई गुजराती शब्दों का समावेश सहजतया हो गया है ।

<u>अन्य भाषाओं के शब्द</u> : उक्त भाषाओं के अतिरिक्त पंजाबी , मराठी , नेपाली आदि भाषाओं के भी कतिपय शब्द पाये जाते हैं । पंजाबी शब्दों में अध्धा तितर ,अपणा ,

फुफ्फजी , कुड़ी , हाय रब्बा , किथ्ये जावां , भैनजी , मैं की करां , जापिए ,फटकड़ी , हाथी दा पैर , बलद , चांदणी जैसे शब्द उपलब्ध होते हैं तो मराठी में मुल्गी , नवरा , उडाला , कावळा , शहाणा , खांबावर /खम्भे पर / , एकटा जीव सदाशिव , शिपाई , सोन्याची पेटी /सोने की पेटी/ गोसावडे /निगोडे / , गुळाचा /गुड़ का / प्रभृति शब्द कहीं-कहीं मिल जाते हैं । नेपाली के भी कतिपय शब्द पाये जाते हैं , जैसे चौदह फेरे उपन्यास में एक स्थान पर आता है — "मेरा रामरो नेपाल " — मेरा सुंदर नेपाल । सुंदर के अर्थ में "राम" का प्रयोग नवीनता का द्योतक है ।

<u>कुमाऊंनी बोली के शब्द</u> : हिन्दी की बोलियों में ब्रज-अवधी के शब्द तो कम मिलते हैं , पर कुमाऊंनी के शब्द बहुत ज्यादा मिलते हैं और यह स्वाभाविक भी है , क्योंकि शिवानी की पात्र-सृष्टि में अधिकांश की नाल कुमाऊँ में गिरी है ।

तुम्बी , ललछौंहा ,कीर्तनिया , बल्लियां , लतुन /नवीन/ , छेपा /पगला/ , जापा , कोथाय /कहां/ , लम्याणी ,लगटुट , नौशा, न्हिलैगो /ले गया/ , रंगरूठा /रंगरूट/ , गुंइयां , धुमारी /सुस्ती/ , थारू-भोटिया , शौक्याणियां , बे लूटे / सूखे घास के लूटे / , छर्तस्या /सुखाया नमकीन गोश्त / , कंच /चांदी की कटोरी/, च्यावती /कुमाऊं की देशी शराब/ , चेली /बेटी/ , सोमौ /कुमाऊं-शराब/, खमीरी टिकिया , जुगली , दुहेजू , जनवासा , चंग , च्युंग , बौक्य , साईत /मुहूर्त/ , बुकचा /गठरी/ , नैडा /गंजा/ , नोआ /लोहे की चुड़ी/ , खुड़ श्वसुर /चचिया ससुर / , अबेर । [31] नौशा ,भौनिया , नहान , पहलौंठी , चेहड़ी , छोपा /पगड़ी/ , लुरबुरिया , भिनसार , चाय-शाय , छोकरी , भकोसना , गनेल {घोंघा} , कनकट्टा , बिगड़ैल , लुनाई , बौज्यू , लल्ला , संड-मुसंड , छोरी , शकुन-आखर , ठहरना × कुमाऊंनी बोली में "ठहरना" क्रिया का बहुत प्रयोग होता है , जैसे उनका आना ठहरा , आखिर बात करना ठहरा , उतरना ठहरा । / , तहाना /तह करके जमाना/ , स्कूलियों को / स्कूल जानेवाले बच्चों को / ,

इजा /माँ/ , लपटन /केप्टन/ , सुटर /स्वेटर/ , चानमारी /निशाना/, जब्बर , पीवे है / कुमाऊंनी में खावे है , पीवे है , बतरावे है आदि क्रिया प्रयोग ग्रामीण लोगों में मिलते हैं । / ; झामा /नीड/ , मोत्यू हार /मोतियों का हार / , भुरिया / यह एक विशिष्ट शब्द-प्रयोग है , बिना निमंत्रण के जो भोज पर चले जाते हैं , ऐसे लोगों को वहाँ "भुरिया" कहा जाता है । / ; कक्का /चाचा/ , बुजाई /नानी/ , पानस /फानुस/ , जवेज्यू /दामादजी/ , जीरै-जीरै /दीर्घायु हो / , आमा /अम्मा/ , वेली , सालीज्यू , कालबिष्ट / एक कुमाऊं देवता/ , सिटौल , घुघुती , तितुर /चिड़ियों के नाम/ , पिस्ल , काखी /काकी/, लालज्यू , पपज्यू , थुल्मा /ऊनी कपड़े का ओढ़ने का एक साधन / ; बाल मिठाई / कुमाऊं की प्रसिद्ध मिठाई / ; माशी , फांका /खाली/ , काग-भगौड़े , नयी गाय को नौ पूले घास / एक कुमाऊं कहावत/ ; मनसाती /इच्छा/ , पतुरिया , पंजीरी , झोल /शोरबा/ , फुरमती फिरना , घर-फुक्काराय , पोटली ।[32] सौर , चेहड़ी , शगुन-आखर , न्यूतं , वैफ /वाईफ/ , सर्भिस /सर्विस/ , मठा भी फूंक-फूंक कर पी रहे हैं /वस्तुतः दूधका जला छाछ भी फूंककर पीता है , यह कहावत है परन्तु कुमाऊं प्रदेश में छाछ के स्थान पर सर्वत्र मठा शब्द का ही प्रयोग होता है । / ; खल्वाट खोपड़ियां , पोजीसन-उजीसन , अकाया-बकाया , बिलैती /विलायती/ , अखत-बखत , दिया बालना , गिरी /फल का गर्भ / , साच्छात , ददोरे , जाखनदेवी /पहाड़ी देवी / , इजा /माँ/ , बाल / रोटी में मक्खन-चीनी लगाकर बनाया गया पहाड़ी क्रीम-रोल/ ; सिसूण /बिच्छूबूटी / का झाड़ू , दाज्यू , डिफ्टी सैप , गैत्रबी /गायत्री की सौं / , गुस्से में भटभटाना , थक्का दही , चखुआ , कठौती , भुटीकुंद के लड्डू , लीख , सग्गड़ /सिगड़ी/ , बुस्बा , बांज /वृक्ष/ ; न मुंह में दांत न पेट में आंत / कुमाऊं कहावत/ , शाहजी , भौनिया , भुकलर , बगटूट भागा , लोटमपोट , खत्याड़ी , रामचन्दज्यू , काण कन्याई , डुन अन्यायी / काना हमेशा कुटिल और लंगड़ा अन्यायी होता है --कुमाऊं कहावत / ; कच्छप , भुतही धर्मशाला , फुक्का

फाड़ कर रोना , गलमुच्छ , कुड़-बुद्धि , बामण , दुम्बा , भड़भूजी की दुकान , अल्लम-बल्लम कोट , जचगी , केकड़ /ऐंठ दिखानेवाला व्यक्ति/ , पितरों की पातली , पंचमेल सब्जी , खिरखाजे , हिट परु परेड करली /अरी परु , चल परेड़ करने / , गोरिल-देव /कुमाऊं के देवता / , झलक्या रया खिस्तर -- धुंघराल्या चारपाई , निंदरा भूल्यूं , भौंरु /भंवरा/ , रांडी क्लब , पातालदेवी , डंकिणी-भुतणी-संकणी-मसानी- कपट की कुंथली ; चौबाटों की धूल -- चेहानू का कोयला ; टपपंडित-इुनत्याड़ी , घात /मूठ/ , मंगजे /सबाई/ , ऐबी , जवान कड़ियल बेटा , एड़ी चुम्बी बाल , जबरा मारे और रोने भी न दे /कुमाऊं कहावत/ भड्डू दाल दाल करबरे ऊंनी , ज्यों ज्यों कुनै जानी /बटलोही की दाल-दाल कहते-कहते आते हैं और फिर पत्नी-पत्नी की रट लगाते चले जाते हैं-- पहाड़ी नौकर-छोकरों के सम्बन्ध में एक उक्ति / , पैलाषा , हरैल-डोर-दुबज्योड़ा-बग्वाली / कुमाऊं के त्यौहार - बग्वाली=भाईदूज / ; खतड़ुवा , पटला /गुज. पाटला/ , पाहुना , दामी साड़ी , बग्वाली का टीका , नौला , धुरे दोटकिया बामण ; काफल, हिंसालु, किल्मौड़ी, मिल्मौडी / कुमाऊं के जंगली फल / ; ax धांत /दांती लगना/ , अनैल-सुनैन /अनिल-सुनील/ , सुनीला , तिलड़ा मंगलसूत्र , सौरास /ससुराल/ , के चेली सौरास जाणी छौं ? ; चूहादंती-मटरदंती /गहने/ , असौज , बान /स्वरूपवती/ , छल /भूत / , बुड्ज्यू , मैल /नितम्ब/ , फिल्मीवाल ऐरई /फिल्मवाले आये हैं / ; ज्यौंला /जुड़वां / , मग्जी /वस्त्र-विशेष/ , पेटमुल्या / कुमाऊं में उस बालक को पेटमुल्यां कहते हैं जिसके पिता की मृत्यु उसके जन्म के पूर्व हो गई हो । / ; कमेट /सफेद खड़िया जिससे स्लेट पर लिखा जाता है / ; बाब सैप , फोटक /फोटो / , उपद्दरी /उपद्रवी/ , कुतुक दे इजा / कितना दिया मां / , नाली /अनाज मापने का पात्र / , भनमजुवा /बर्तन मलनेवाले/ , पछि /पछि भी गए हैं -- दिन चढ़ गये हैं / ; बन्ने-घोड़ियां /गीत/ ; कलमटिया /स्थान-विशेष का नाम -- ऐसी दंतकथा प्रचलित है कि यहां के पुरोहित बड़े सिद्ध पुरुष थे , एक बार हवन-कुंड में उन्हें जलाने के लिए लोहे के सलिये

दिये गये तो उन्होंने उसमें अग्नि प्रकट की । तब से वहाँ की मिट्टी के काली पड़ जाने के कारण उसका ऐसा नाम पड़ गया । / ; सूतक xxxxx /अशौच/ , नातक / शिशु जन्म की छूत / , भंड साधु / तुलनीय-भांड / सकोरा / तुलनीय गुज. शकोरुं / ; छनचरिया /शनीचरी/ , ओ इजू- ओ बुबू , घरकुड़ी-लटपटी xxxxxxxx / जायदाद / ; छाजा /बैठक /; बीपै /बृहस्पति / के दिन { पहाड़ों में बृहस्पति के दिन बेटी नहीं बिदा करते । दूसरी ओर कहीं-कहीं बृहस्पतिवार को उलायतावार मानते हैं और किसी भी शुभ कार्य के लिए उसे अच्छा मानते हैं । } दुर्गुण /द्विरागमन / , जुहरा /जुआ / , ओड़ मिस्त्री , पुआल /गुज- परार / , बारह पत्थर दूर फेंक देना /मुहावरा — बहिष्कृत कर देना / ; "अन्यारि कुठैणी /तितिर बांसी /बुड़ गजेसिंह / जुग मलाशी " {अंधेरी कोठरी में अब तीतर बोलने लगा है और बूढ़ा गजेसिंह फिर मूठे फेंकने लगा है । } ; बल्द /तुलनीय - गुज. बळद / ; अल्मोड़ियैक पछांण , ढुंगौंक दिशाण { अलमोड़े की तो पहचान ही यही है कि लोग पत्थर के बिछौने पर सोना पसंद करते हैं । } ; "उड़कुची मुर- कुच्ची / लइया कैंची पिरतिल ऐंची } ; " घुघुती बासूती /माम कां छो ? मालकोटी / के ल्यालो ? / दूध भाती / को खालो / तू खाली / भातै की तौली घुर्र घुर्र । " ; भांज /गड्डी / । [33]

इस प्रकार अन्य कई उपन्यासों में कुमाउंनी के शब्द उपलब्ध होते हैं । वस्तुतः शिवानीजी की भाषा-शक्ति का मूल स्रोत ये शब्द हैं । इनसे प्रतीत होता है कि लेखिका कितनी गहराई के साथ अपनी जमीन से जुड़ी हुई है ।

4.03 : तत्सम -तद्भव - देशज शब्द :

तत्सम शब्द : भारतीय भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है , अतः अधिकांश भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत के शब्दों का आधिक्य पाया जाता है । इन शब्दों के कारण ही ये भाषाएं एक-दूसरे के करीब पाई जाती हैं । उदाहरणार्थ गुजराती और हिन्दी में

तथा मराठी और हिन्दी में ऐसे हजारों शब्द मिल जायेंगे जो मूलतः संस्कृत के होने के कारण समान हैं । ऐसे शब्दों को व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से "तत्सम" कहा जाता है । इसी अध्याय के अन्तर्गत जो संस्कृत शब्द निर्दिष्ट किए गए हैं , वे तत्सम शब्द ही हैं , तथापि यहां उदाहरण के तौर पर कुछ शब्दों को दिया जा रहा है —

ग्रीष्मावकाश , प्रासाद , षष्ठी-पूजन, प्रतिवेशी , उत्कोच , घनीभूत , हरीतिमा , परिवेशन , वाक्याडम्बर , द्रुम , गगनांगन , गिरि-वैभव , अलसगमना , पाण्डुजीर्ण , वृक्ष-स्कंध , निबद्ध , अनिबद्ध-स्वरलहरी, व्रीडा , प्रकोष्ठ , घृतज्योत , गतयौवना , रंध्र , दंतपंक्ति , नापित , पलित , प्रस्तर , प्रशस्त ललाट , प्राक्तन छात्रा , कदम्ब , दौर्बल्य , शिखासूत्र , आसव , प्रत्यावर्तन ।[34] आसन्न-प्रसवा , निरामिष , दुष्कीर्ति , तरणी , स्वरलयनटी , चतुरा , वारवधू , मंदोदरी , रक्तचाप, समवयस्या , गगनचारिणी , पाण्डेसुता , सौम्यानना , वस्त्राभावे पुष्पम् , दीर्घांगी , भृत्य , विवस्त्रावस्था , सौरगृह , पर्यंक , नतमुखी, मुखरा , ध्रुपद , अश्रुसिक्त , सद्यः विवाहित , औदार्य ।[35]

<u>तद्भव शब्द</u> : उन शब्दों को तद्भव कहा जाता है जो संस्कृत या अन्य किसी भाषा [अंग्रेजी या अरबी-फारसी] से उद्भूत हुए हैं । हमारी भाषा में ऐसे हजारों शब्द पाये जाते हैं । अतः यहां कुछ विशेष शब्दों को ही देने की चेष्टा हुई है । कोष्ठक में मूल भाषा के तत्सम शब्द दिए गए हैं ।

साच्छात /साक्षात् / , परेत /प्रेत/ , पलाई /पालन/ , तीरथ-जात्री /तीर्थ-यात्री / , परयागराज /प्रयागराज/ , धरम-भरस्ट /धर्म-भ्रष्ट / , छठ्ठी /षष्ठी/ , ससुर /श्वसुर/ , मुसल्ला /मुसलमान/ , जजमान /यजमान/ , जोबन /यौवन / , भंवरा /भ्रमर / , कुन्नी /कणिका/, बत्ती /वर्ति / , लोक्खी /लक्ष्मी / , जमाई /जामाता/ , लुनाई /लावण्य/ , अलच्छनी /अलक्षणी/ , लखटकिया / लक्षटक/ , मसान /श्म-शान / ।[36] खम्भा /स्तम्भ / , नौशा /नौशाह/ , भात /भ्राता/ [यहां

"भात" शब्द से तात्पर्य वह "दाल-भात" वाला भात नहीं , प्रत्युत वह "भात" है जिसमें भाई अपनी बहन के पुत्र या पुत्री के विवाह में चढ़ावा लेकर जाता है । ‡ , पड़ौसी /प्रतिवेशी / , माशी /मातृश्वसिका/ , क्रिस्तान /क्रिश्चियन/ , दामी /दाम/ , मुसलमानिन /मुसलमान/ , ल"ला /लालनम्/ , फानस /फानूस / , नाई /नापित/ , मुंडाई /मुंडन/, पोटली /पोट्टलिका/ । [37] देवर /द्विवर/ , सौतिया-सौत /सपत्नी/, डाह /दाह/ , आंसू /अश्रु×/ , जोत /ज्योत/ , समधी /समध्व-साथ यात्रा करनेवाला/ , दीठ /दृष्टि / , सांकल /श्रृंखला/ , तिंथापा /तीर्थ-मसान/ , सास /श्वश्रू / , साला /श्यालक/, साली /श्याली; श्यालिका / , तीखी /तिक्त/ । [38] सिरजना /सृष्टि / , आन /अन्य/ , मांझार /मध्य/ , घड़ी /घटी/ , नरिया /नरेन्द्र/ , ननद ननंदृ / , ननदोई /ननांदृपति/ , घी /घृत/ , च"की /चक्र / , दूध दुग्ध / , उल्लू /उलूक / , आखर /अक्षर / , वैफ /वाईफ/ , दीया /दीप/ , गैत्री /गायत्री/ , सैप /साहब / , रूखा /रुक्ष / , मक्खी /मक्षिका/ , दुरजोधन /दुर्योध न / , बामण /ब्राह्मण / , भात /भक्त-चावल / , अनैल /अनिल / , सरग /स्वर्ग / , पच्छ /पक्ष / , नरैण /नारायण / , ससुराल /श्वसुरालय/ , पिंजड़ा /पिंजर/ , षट-कुली /षटकुल / , माथा /मस्तक / , रतजगा /रात्रि-जागरण / , सिरीकोट /श्रीकोट/ , दूज /द्वितीया/ , ऐबी /ऐब/ , छनचरिया /शनिचरी/ , गतकिरिया /गतक्रिया/ , बीपै /बृहस्पति/ , दुर्गुण /द्विरागमन/ , बल्लियां - बल्ली /वलिकः/ , संकणी /शंखिणी/ , नागणी /नागिन / । [39]

यहां यह तथ्य ज्ञातव्य हो कि वैसे तो भाषा में प्रत्येक वाक्य में कई-कई ~~शब्द~~× तद्भव शब्द मिल सकते हैं ××~~प्रयुक्त~~× , परंतु यहां केवल उदाहरण के लिए कुछ विशेष शब्दों को ही लिया गया है ।

4.04 : नवीन शब्द-प्रयोग :

भाषा में हजारों शब्द होते हैं । वैसे तो प्रत्येक शब्द का अपने आप में महत्व है । किसी शब्द को हम महत्वहीन नहीं कह सकते ।

कालरिज ने काव्य की परिभाषा देते हुए कहा है — "पोएट्री इज द बेस्ट वर्ड्ज इन थेर बेस्ट आर्डर । " [40] अर्थात् सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम में प्रयोग कविता है । अभिप्राय यह कि भाव , वस्तु प्रभृति के अनुसार शब्द-चयन का कौशल ही किसी शब्द-विशेष को महत्वपूर्ण बना देता है । उपन्यास में नये शब्दों के प्रयोग से अभिप्राय यह है कि उन शब्दों का कुछ नये ढंग से प्रयोग हुआ है । "ओटोग्राफ" और "होंठ" ये दो शब्द हैं और कई वर्षों से हैं , परन्तु मोहन राकेश ने अपने उपन्यास "अन्धेरे बन्द कमरे " में इन दो शब्दों से एक नयी भाव-व्यंजना की सृष्टि की — "होंठों का ओटोग्राफ " अर्थात् "चुंबन" । [41] सद्यः-प्रकाशित पुस्तक "परिधि पर स्त्री " में नारीवादी-विमर्श को लेकर कतिपय महत्वपूर्ण मुद्दे तो उठाये ही गए हैं , पर इस पुस्तक की भाषा भी पाठक का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम है । उसमें एक स्थान पर भीष्म के सन्दर्भ में वाक्य आता है — " जनहित तथा करुणा की अपेक्षा भीषण प्रण को जो चुनेगा , उसे अन्त में उस प्रकरण की शिखंडी ओट में प्रश्नों की शरशैया ही मिलेगी । " [42] यहाँ प्रकरण की शिखण्डी ओट " तथा "प्रश्नों की शरशैया " जैसे शब्द एक नवीन विचार-सृष्टि के कक्ष की अर्गलाओं को खोलते हुए दृष्टिगत होते हैं । इसी पुस्तक में "पुलिसिया कोप" , "न्यायिक उपसंहार" , "यह संख्या एक विशाल हिमशैल का एक छोटा-सा अंश है । " , "उत्तरपर्णिका " /एनेक्स्पोर/ , "फिलवक्त" , "नतीजतन" "हैवानगी" [43] जैसे वाक्य-प्रयोग या शब्द-प्रयोग भाषायी प्रस्तुतियों को अधिक बलवत्तर बनानेवाले हैं । कई बार नवीन परिस्थितियों के कारण नये-नये शब्द अस्तित्व में आते हैं , तो कई बार नवीन भाषाओं के संपर्क के कारण भी कुछ नये शब्द कुछ भाषाओं में समाविष्ट हो जाते हैं । यह भी गौरतलब होगा कि संस्कृत जैसी प्राचीन भाषा के शब्द कई बार नये संदर्भ में प्रयुक्त होकर भाषा को एक नाविन्य प्रदान करते हैं , तो कई बार हास्य-व्यंग्य की सृष्टि के लिए भी इस प्रकार के भाषा-प्रयोग कलागत सार्थकता सिद्ध करते हैं । आज का हजाम या नाई स्वयं को ब्युटिशियन कहलाना पसंद करता है । वैसे आम तौर पर हिन्दी में उसके लिए "नाई" शब्द

प्रयोग में लाया जाता है , परंतु बाबू गुलाबराय ने "मेरे नापिताचार्य" शीर्षक एक हास्य-निबंध उस पर लिखा है । अंग्रेजी के शब्दों को एक नये विशिष्ट परिवेश में प्रयुक्त कर कई बार नवीनता की सृष्टि की जाती है , जैसे शिवानीजी ने "कृष्णकली" उपन्यास के अंत में "वीसा" शब्द को कली के मृत्यु-तर्पण जैसे प्रसंग से सन्दर्भित कर उसमें एक नयी अर्थवत्ता भर दी है — " न उसका कुल था न गोत्र , हिन्दू-शास्त्र तो उस पार जाने वाले यात्री से भी कुल गोत्र का वीसा मांगता है । " [44] यहां पर ऐसे कुछ शब्दों को चिन्हित करने का उपक्रम है ।

नर्म कर्टसी , सौन्दर्य का प्रासाद , मृतवत्सा , अधेड़ अंगूठा, वीतयौवना , भुवनमोहिनी हंसी , मंदोदरी की क्षीण कटि को आंखों के इंचीटेप से नापना ; गलग्रहधारिणी , श्मातुलम्बर , याद को घुटकना, भीमकाय भैंसें , रेशमी पलकें , चेहरे की मरीचिका , अनजान सिन्ड्रैला, मारात्मक साड़ी , सौम्यानना , " न जाने कितने प्रोफ्यूमो उनकी मुट्ठी में बन्द रहते " ; शंखग्रीवा , हृदय-नवनीत का पिघलना , निद्रान्ध सुन्दरी , दुर्दिनाभिसारिका , दस्युकन्या , शंखघोष का एलार्म, कौमार्यकवचधारिणी , आशा की खोखली ललक , साधुओं का एरिस्ट्रोक्रैटिक जोड़ा , अनुसंधानी दृष्टि , हनिमुनिया जाना , संगीतशिल्पान्विता, यौवन का उत्कोच , स्मृति-द्वार का जंग लगा ताला खोलना , क्यूपिड अधर , विवेक-विटप का भरभराना , परिहास-प्रिया , स्वरलयनटिनी, आकस्मिक औदार्य । [45] पाटल-प्रसून , प्राक्तन छात्रा , अल्लम-खल्लम ब्लाउज , खूंखार इंस्पेक्शन , ह्रस्व परिधान , मदिर झांकि , ढीलमढाल व्यक्तित्व , कलहप्रिया कुंठिता मास्टरनियां , वैभव की परतें , मूर्ति-तस्कर , श्रृंगारमग्ना अभिसारिका , सिरफिरी सहेली , औद्धत्य , अनु-शासन का करपुट , निद्राविहीन विभावरी , विवेक की बत्तीसी , कौमार्य का रहस्यमय पाण्डुरोग , "उसका अनूठा लटका किसीके भी निरामिषभोजी सात्विकी पति को सामिषभोजी बनाने में समर्थ थी " , आहत अश्रुसिक्त दृष्टि , "डिबिया में माणिकहीन अंगूठी किसी कंकाल के शून्य नयन कोटर-सी अपने सोने के नन्हे-नन्हे पंख फैलाए विवश पड़ी थी " ।[46]

लोलुप अजदहा , प्रतिवेशी , मर्दानी रूमाल , सरल ग्राम्याएं , संयम की विराट शिला से दाबकर , निम्न नाभि क्षीणमध्यमा उस बिल्वस्तनी की अलस पदचाप को भला कौन-से जूतों का बंधन जकड़ सकता था ? ; प्रतिभा के चेक भुनाना , रांड-रंडुकुलियों , रत्नगर्भा जननी , बैचमेट , छोपा ﴾ एक प्रकार के सफेद कोरे लट्ठे का वस्त्र , जो पिता या माता की मृत्यु हो जाने पर कुमाऊंनी पुत्र को बांधना पड़ता है ﴿ ; जून﴾ज्योत्स्ना ﴿ , "पीताम्बर पाण्डे के काल्पनिक प्रणय की सद्यः प्रस्फुटित कली " , ग्रामाकाश , "उधर पुष्पा अपने तृप्त कपोलों को छूती इधर-उधर पार्श्व-परिवर्तन कर रही थी ﴾कई बार क्षमायाचना या भूल-स्वीकार के लिए बारी-बारी से दोनों गालों को छुआ जाता है ﴿ ; अंतरिक्षचरा डाकिनी-शाकिनियां , स्निग्धायत नेत्र , प्रणयोन्मत्त आँखें , सासटोका ﴾जिसके छीजे दांत हो वह सासटोका होता है , ऐसी पहाड़ों में मान्यता है । "सासटोका" अर्थात् उसकी सास जल्दी मर जाती है । ﴿ ; बलवीर्य मदोद्धत्त असुर ।[47] उग्रतेजी कंठ , गरिष्ठ संगीत-परिवेशना , अंग्रेजी फूंकतीं दम्भी पत्नियां , कन्धों सतर उठान, नीमगाछ , देवदत्त प्रतिभा , लाड़-दुलार का गरिष्ठ कुपथ्य , नकचढ़ी ससुराल , निमाई गौरचन्द्र ﴾ एकदम गोरे व्यक्ति के लिए ﴿ , उपहारों का स्तूपाकार गट्ठर , सदन्ती ﴾ जो गर्भ से दांत लेकर आता है ऐसा बच्चा कुलघाती माना जाता है । ﴿ ; नियति का चक्रव्यूह , आबनूसी चेहरा , कण्ठामृत ﴾संगीत﴿ , "रेसिडेण्ट के प्रासादोपम उत्तुंग सौंध की अबीरी छत " ।[48] प्रकोष्ठ , ढूंढ , द्रुतगामी स्पीड , घनीभूत विषाद , परिवेशन ﴾परोसना﴿ , लुनाई , होई-चोई ﴾दौड़-धूप﴿ , तुषाराक्रान्ता , हिस्टीरीकल सपने , संदली , सुचिक्कन काले केश ।[49]

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि शिवानीजी के उपन्यासों में हमें शब्दों के कई नये प्रयोग दृष्टिगत होते हैं ।

4.05 : वर्णमैत्री वाले शब्द :

भाषा का भी अपना एक संगीत होता है , एक सौन्दर्य

होता है । कई बार दो या दो से अधिक शब्दों में प्रथमाक्षर यदि एक ही प्रकार के हों तो उससे भाषा की ध्वन्यात्मकता में एक विशिष्ट प्रकार की झंकृति एवं संगीत का अनुभव होता है । कविता में अनुप्रास अलंकार के अंतर्गत इसकी छटा को देखा जा सकता है , जैसे — "सर सबसे सुंदर साजसजी सुहानी धरा सबसे है , वंदे मात । " इस पंक्ति में "स" की बार-बार की आवृत्ति से पंक्ति में वर्ण-संगीत की सृष्टि होती है । गद्य में भी ऐसे प्रयोग भाषा-समृद्धि को बढ़ाने वाले समझे जाते हैं । जहां दो शब्दों में वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है , वहां उसे छेकानुप्रास कहते हैं । "छेक" शब्द का अर्थ ही चतुर ऐसा होता है । प्रौढ़ एवं विदग्ध कवि ही ऐसे अलंकारों का प्रयोग कर सकते हैं ।[50] xx बिहारी के एक दोहे में छेकानुप्रास की छटा देखते ही बनती है —

"राधा के बर बैन सुनि , चीनी चकित सुभाय ।
दाख दुखी मिसरी मुरी , सुधा रही सकुचाय ।। " [51]

यहां "ब" , "च" , "द" , "म" तथा "स" की दो-दो बार आवृत्ति होती है ,; अतः इसमें छेकानुप्रास अलंकार की व्यंजना हुई है । इसे भाषाविज्ञान में "वर्णमैत्री" या "वर्णसख्य" कहते हैं । "स्मृतियों की सौगात " , "भाषागत भव्यता" , "ललना-लावण्य" , "रूप की रोशनी" जैसे शब्द-प्रयोगों में वर्णमैत्री की प्रवृत्ति को लक्षित किया जा सकता है । यहां शिवानीजी के कुछ उपन्यासों से ऐसे शब्दों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं —

सनातनी संस्कार , जटिल बेड़ियों में जकड़ना , तमाल-तरु , लीपलापकर , चेहरों पर की चानमारी , सहमी-सिमटी , चौखानी चिकट-सी चादर , उन्नत उरोजों का उभार , सुरमई सांझ , सुखद-संध्या , पंगु-पति , स्नेह का शासन , कृष्ण केशपाश , विधाता ने विवेक और वाणी दोनों से वंचित कर दिया था , सिकुड़ा-सहमा , साड़ियों की सुरसुराहट ,शील-सौम्यता , अभिमान और उपालंभ के आंसू , वन-वनांत , कुण्डल-किरीट , मान-मनौवल , शील-सौजन्य,

कांखती-कराहती , आभूषणों का उपहार , विराट-वपु , सरल स्कंध-स्पर्श , गूंज गहन गुहाद्वार , गोरा गोल-गप्पा-सा चेहरा , पीतल का पानस , उन्मादग्रस्त आंखें , प्रणयी-पति , क्लान्त श्वास का करुण स्वर , चिता में चटकना , उदार-उत्कोच , और उनकी आश्रिता आधुनिक आधा दर्जन रूपसियां , क्रीड़ा-कौतुक , साफ-सूफ , अतिथि-अवहेलना , फुरमती फिरना । [52] अरण्यस्थित अट्टालिका , प्रोषिता-पत्नियां , विचार-विनिमय , सुखद -सहवास , गुदगुदा गावतकिया , पाटल-प्रसून , उदार अनुदान , सुंदरी सहचरी का साहचर्य , सनकी सहोदरा , संध्याकालीन सुभग सौन्दर्य ; [53] पर्वत-पुत्रियां , चमकीली चपरास वाले चपरासी , दुःस्वप्न की कालिमा के काले कम्बल , कलुष-कलंक , वर्षों पूर्व की परिचित पुरुषदेह-परिमल , गगनभेदी गड़गड़ाहट , पथरीले प्रांगण ; [54] निभृत-निर्जन , भार-भरकम , गरिष्ठ-ग्रास , जमुनार जल , कौसी-कान्हड़ा , पीढ़ियों का पार्थक्य , गहन-गह्वर ; [55] दशहरा-दरबार , कलुष-कल्मष , करुण-क्रन्दन , संपत्ति-स्तूप , मर्मान्तिक मार , , धरा में धंसना , प्रगल्भ-प्रतिभा , अहंकार की ओट , अभिशप्त अतीत ; [56] छलाछल छलकती , चुप्पी की चतुराई , अज्ञात आशंका , अनकहे उपालंभ , अनिवार्य अभिज्ञता , वात्सल्य-विगलित , अभिशप्त अस्तित्व , शैशव के शत शत स्मृति-चिह्न , अप्रत्या-शित आगमन , आहत आंखें , मेवा-मिष्टान्न , न्यारे-नयन , बुर्क-बैरे , औदार्य की आशा , कमलेश्वरी का कण्ठस्वर , स्वाभाविक संयत स्मित , , परवरिश-पलाई , अदृश्य आघात , सुहाग की सौगन्ध , देहरी का दीया , मुंहजली मूरत , चिकित्सक चित्त , आनंदित आमंत्रित अधीनता दुसह्य दारुण दाह , परिधान की पूर्वस्मृति , विवस्त्रा वारवधू , प्रवासिनी पुत्री , प्राक्तन प्रेमी , चंदन-चर्चित ; [57] पांडित्यपूर्ण प्रलाप , भयावह भगवा मूर्तियां , विद्युत-वह्नि का वज्रपात , मत्त-मयूरी , भाग्य-वती भतीजियां , विस्मृत-वेदना , रूपवती राजकन्या , गुदगुदे गलीचों पर गठरियों के गस्से , निपुणा नागरिका , नटवर-नागर , कार्यकलाप की कैफियत , बिना बात के बगावत , प्रकृति-प्रदत्त पाटल-प्रसून , तगड़ी-तनख्वाह , जौहरी-जिह्वा , प्रवासी पर्वतीय परिवार ,

गुरुगर्जना-सी गूंज , धूनी-धूम्र , कपाल-कुण्डला , आसन्नप्रायः अवसान , हरीतकी की हरीतिमा , सरल स्कंधस्पर्शी , सर्पिल पथ की सुदीर्घ परिक्रमा , स्मृतियों का सागर , गृहस्थी की गहराई , कठिन-कपाट , मुस्कान का मधु , गुरुमंत्र की गायत्री , सुनहले शैशव के साथी , अनुशासन-चूर्ण की चुटकी , प्रबल प्रभंजन , शंकालु स्वभाव , 'गुडनाइट' के गुलदस्ते , प्रयोजन के प्रसाधन , विकार-व्याल , स्मेलिंग-साल्ट , कारागार की काल-कोठरी । [58]

4.06 : ध्वन्यात्मक शब्द :

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो ध्वनि के आधार पर गठित होते हैं । भाषा-उत्पत्ति के जो अनेकानेक सिद्धान्त प्रचलित हैं , उनमें एक सिद्धान्त ध्वन्यात्मक अनुकरण का भी है । अंग्रेजी में इसे Bow-Wow Theory या Onomotopoeic या Echoic Theory आदि कहते हैं । इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य ने अपने आसपास के पशु-पक्षियों की ध्वनि के आधार पर कुछ शब्दों का गठन किया और बाद में उनके आधार पर भाषा का निर्माण हुआ ऐसा माना जाता है । ऐसे ध्वनिमूलक शब्दों में "म्याऊं-म्याऊं" , में-में , बें-बें - , मिमियाना , दहाड़ना , गुर्राना , हिनहिनाना , फटफटिया {मोटर- बाईक} आदि आते हैं । [59] शिवानीजी के उपन्यासों में भी कुछ ऐसे ध्वन्यात्मक शब्द प्राप्त होते हैं , जिनको नीचे दिया जा रहा है :—

धप्पाबाजी , ताबड़तोब , छौंक लगाना , बकर-बकर करना , ऊटपटांग , गगनभेदी डकार , ढीलमढल्ला , माथा ठनकना , धींगड़ी , गिड़गिड़ाना , फुसफुसाना , खांसती-खंखारती , घुड़कना , झरझराना , पिचकारियां , सिसकियां , सू-सू करना ; [60] भड़ास , करकराती दरी , घरघराना , चा-चा-चा डान्स , होईचोई {दौड़धूप} , संडमुसंड , कराहना, किटकिट , अगलम-बगलम , सकपकाना , झकोला , तितुर , पिपुड़ी , ठिठोलियां , खुंखार , फुत्कार , लबालब , धड़ल्ले से , थमककर खड़े हो जाना , अचकचाकर , खिलखिलाती हंसी , फरमती फिरना , धड़ाधड़ स्पीड । [61]

4.07 : ध्वनि-पुनरावर्तन वाले शब्द :

भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जहां उसी प्रकार की ध्वनि का पुनरावर्तन किया जाता है । अंग्रेजी में भी ऐसे कई शब्द होते हैं — बाय हूक और क्रूक , ब्यू एण्ड क्राय , वाऊ-वाऊ आदि । हिन्दी में भी ऐसे कई शब्द मिलते हैं , जैसे रोटी-सोटी , चाय-शाय , बात-वात आंव-गांव , अल्लम-बल्लम आदि आदि । इनमें कहीं-कहीं तो प्रदेश के अनुसार थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी मिलता है । अनेक स्थानों पर इधर गुजरात में जो दूसरा शब्द आता है वह प्रायः "ब" से शुरू होता है , जैसे चाय-बाय , लड़का-बड़का , रोटी-बोटी , कागज-बागज ; परंतु हिन्दी प्रदेशों में तथा पंजाब की तरफ अनुवर्तित शब्द "श" से प्रारंभित होता है — चाय-शाय , रोटी-सोटी , पानी-सानी इत्यादि । कई बार इन अनुवर्तित शब्दों के कोई अर्थ भी नहीं होते । ऊपर जो "चाय-शाय" शब्द दिया है , उसमें "चाय" तो सार्थक है , परंतु "शाय" का कोई अर्थ नहीं । बोलचाल की भाषा में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग काफ़ी होता है , और उपन्यासकार को तो प्रायः बोलचाल की भाषा से वास्ता पड़ता है । अतः उपन्यासों में इस प्रकार के शब्दों का आना स्वाभाविक ही समझा जायेगा । यहां केवल उदाहरण हेतु ऐसे कुछ शब्दों को देने का प्रयत्न किया है :—

लुढ़कते-पुढ़कते (भैरवी, पृ. 73) , गरज-तरज , ढील-ढिलाव, अल्लम-शल्लम , भतर-फतर (तीसरा बेटा , पृ. 28, 50, 75, 75) ; गतायु-जतायु , कर्ज-फर्ज , भकोसना-चकोसना (मायापुरी , पृ. 71, 78, 114) ; पटा-पुटूकर (श्मशानचम्पा, पृ. 19) ; कल्पना-जल्पना, (xxxx)xxx (विषकन्या , पृ. 9) ; अल्लम-खल्लम , मंदिर-वंदिर (माणिक , पृ. 10, 11) ; इनके अतिरिक्त कई स्थानों पर चाय-शाय या रोटी-सोटी जैसे शब्द भी आये हैं ।

4.08 : क्रियाओं के कुछ प्रयोग :

भाषा में क्रिया का तो विशेष महत्व है । वाक्य का

गठन बिना क्रिया के संभव नहीं । अतः भाषा में हजारों क्रियावाची शब्द मिलते हैं , परन्तु यहां सामान्य से हटकर कुछ विशिष्ट प्रकार के क्रियारूपों को लिया गया है । अधिांश क्रियाएं धातु से निर्मित होती हैं , परंतु नामधातु क्रियाओं का निर्माण संज्ञा , विशेषण आदि से भी होता है ; जैसे "बात" से बतियाना , "लात" से लतियाना , "लाज" से लजियाना आदि आदि । उसी प्रकार बहुत-सी ध्वनिमूलक क्रियाएं होती हैं , जैसे धुकधुकी होना , थुड़ी-थुड़ी होना , घरघराना , फड़-फड़ाना आदि क्रियाएं । कई बार अंग्रेजी शब्दों के मेल से कुछ नये क्रिया रूप बनाने का यत्न लेखक करते हैं । शिवानीजी ने "हनीमून" के लिए पागल्य प्रदर्शित करनेवालों के लिए एक शब्द मुद्रित किया है -- हनीमूनिया जाना । लवेरिया होना भी ऐसा ही गढ़ा गया शब्द है । यहां पर ऐसे कुछ विशिष्ट क्रिया रूपों को रखने का उपक्रम है ।

भात भरना , बिसूरना , वेज़ होना , नोन-वेज़ होना , जोगाड़ करना , किन्तु-परन्तु करना , धुआं देखना (बुरा चाहना) , सुरसुराना , हाराकिरी करना , कांखना-कराहना , तहाना , चान-मारी करना , गदराना , तबीयत तर हो जाना , गरमाना , चिड़-चिड़ाना , ठण्डाइए , थमकना , फ्लाई करना , सकपकाना , मनसाना (घर छोड़ने को मनसाती नहीं) , अचकचाना , हिलोरना , फुरमती-फिरना ; [62] तुषारापात होना , मूँछें सतर हो जाना , डिफाण्ट होते जाना , चकरघिन्नियाना , बेड-टी लेना , प्रपोज़ करना , हिप्नो-टाइज्ड करना , प्रभाव का चेक भुनाना , झरझराना , एम्बरैसिंग लगना, विचलित करना , गोता मारना , मंत्रियों वाला ` हो जायगा ` कहना , अण्डों का फलाहार करना , हनीमुनिया जाना , जाने की तिकतिक लगाना , गिड़गिड़ाना , भरभराना , खंखारना ; [63]उखेलना (धुनी की राख को उखेलना) , उदरस्थ करना , लतियाना , कौंधना , ललकना , [illegible] फिटफाट होना , मुटिया जाना , भाषा में पिरोना, कोंचना , चटकना , टरका देना , सुस्ताना , थकियाना , थुरथुराना ([illegible] जाड़े में [illegible] थुरथुराना) , भूंज देना , फांदना , धुनना

(चिन्ता घुने जा रही थी), भांपना (हिन्दी में "भांपना" का अर्थ अच्छी तरह से देखना होता है, जबकि गुजराती में "फ्लर्टिंग" के अर्थ में इसका प्रयोग होता है), फुसफुसाना ;[64] सरलीकरण करना, अभिज्ञता प्राप्त करना, इण्टर्नशिप करना, दूधों नहाना पूतों फलना, गाय का रम्भाना, बालना (दीया बालना – दीया जलाना), स्मृतियों का रिसना-बसना, भकोसना, दहीं–नींबू सानना, गुस्से में भटभटाना, हीटिंग, प्रोम्पटिंग, ~~हुक्मउदूली~~ हुक्मउदूली करना (हुक्म का पालन न करना), लोटमपोट करना, बगटूट भागना, दहाड़ना, बिलबिलाना, सहमाना, डिच करना (धोखा देना), जचगी आना, डिसाइफर करना, जिदियाना, बौराना, सूतक लगना, बिताना (विश्राम करना), होमसिक फील करना, रिसना (रिसता घाव खुलने लगा, क्रेजी होना, तमतमाना, इंज्वोय करना, बालों का पकना, टेक्स उघाना, झिंझोड़ना, पछि होना (दिन चढ़ना), भसकाना (प्याज की पकौड़ियां भुसका रहे थे), बकर-बकर करना, जै लगाने (बांहों में बांधने), हकलाना, भांजी मारना, वमन, विरेचन, प्लेन क्रैश हो जाना, गुस्सा थूकना, नाक चढ़ाना, दुरदुराकर भगाना ।[65]

वस्तुतः इस प्रकार की क्रियाएं जिस भाषा में जितनी ही ज्यादा पायी जाती हैं, वह भाषा उतनी ही समृद्ध एवं संपन्न समझी जाती है । अंग्रेजी भाषा की जो प्रकृति है उसमें संज्ञा, विशेषण ~~इत्यादि~~ इत्यादि से क्रिया बनाने की प्रक्रिया बहुतायत से पायी जाती है । हिन्दी के शैलीकारों में निश्चयतः उन शैलीकारों को अग्रिम पंक्ति में रख सकते हैं, जिन्होंने इस प्रकार के क्रिया-रूपों में बढ़ोतरी करके हिन्दी की शब्द-संपदा में इज़ाफा किया है । शिवानीजी को भी हम उन शैलीकारों में रख सकते ~~है~~ हैं ।

4.09 : शब्दों का हिन्दीकरण :

~~जैसे~~ जैसे भाषा का विकास होता जाता है, उसमें अन्य भाषा के शब्द भी मिलते जाते हैं । कई बार ऐसा भी होता है कि

किसी भाषा में जो शब्द होता है, दूसरी भाषा में वह शब्द नहीं होता। तब उस शब्द को या तो उसके "तत्सम" रूप में अंगीकृत कर लिया जाता है, या फिर उसके लिए शब्द गढ़ा जाता है। हिन्दी में अंग्रेजी के अनेक शब्दों के लिए संस्कृत के आधार पर शब्दों का गठन हुआ है। शिवानीजी के उपन्यासों में ऐसे कई शब्द प्राप्त होते हैं। कहीं-कहीं लेखिका ने कुछ अति-प्रचलित शब्द-गुच्छों का हिन्दीकरण प्रस्तुत किया है, जैसे "कस्तूरी मृग" उपन्यास में अंग्रेजी के "फ्रेंड फिलोसोफर एण्ड गाईड" के लिए लेखिका ने सखा, सहचर एवं पथप्रदर्शक शब्द का प्रयोग किया है।[66] "कालिन्दी" उपन्यास में ओनरेरियम" के तथा "ओल्ड ~~स्टुडण्ट~~ स्टुडण्ट" के लिए क्रमशः "मानदेय" तथा "प्राक्तन-छात्र" जैसे शब्द-प्रयोग उपलब्ध होते हैं।[67]

अनुबंध (कोन्ट्राक्ट), विद्युत-वह्नि (लाईट), उक्त रक्त-चाप (हाई बी.पी.), गगनचारिणी (एयर-होस्टेस), प्रागैतिहासिक युग (प्रि-हिस्टोरिक पीरियड), सद्यः विवाहित (न्यूली मेरिड);[68] प्रकोष्ठ (सेल), प्रतिवेशी (नेबर), उत्कोच (ब्राईब), भ्रांतिपूर्ण अस्तित्व (एल्यूसिव एग्जिस्टन्स), समवयस (हमउम्र), लौह-स्तम्भ (आयर्न पिलर), भाषाविज्ञानी (लिंग्विस्ट);[69] अवकाश-प्राप्त (रीटायर्ड), मधुमेह (डायाबिटीश), उक्त रक्तचाप (हाई बी.पी.), आंतरिक आवास सज्जा (इंटीरियर डेकोरेशन), शयन-कक्ष (बेड-रूम), अतिथि-कक्ष (गेस्टहाउस), तस्करी (स्मगलिंग);[70] आसन्नप्रसवा (प्रेग्नण्ट), स्थूलांगी (फैटी), विद्युत मृतदाहगृह (इलेक्ट्रिकल क्रिमिटोरियम), अतिथिशाला (गेस्टहाउस);[71] आबंटन (डिस्ट्रिब्युशन), मानदेय (ओनरेरियम), वरीयता-क्रम (सीनियोरीटी), शल्य-चिकित्सक (सर्जन), धूप का चश्मा (गोगल्स) जैसे अनेक शब्द शिवानीजी के उपन्यासों में हमें मिलते हैं।

4.10 : आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्द :

शिवानीजी के उपन्यासों का परिवेश प्रायः नगरीय सुशिक्षित

समाज का परिवेश है, अतः उसमें आधुनिक सभ्यता से संपृक्त शब्दावली का प्राप्त होना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। उनके प्रायः सभी उपन्यासों में इस प्रकार की शब्दावली प्राप्त होती है, तथापि यहां उनके केवल दो-तीन उपन्यासों से ही कुछ शब्द प्रस्तुत किए हैं। इनमें अधिकांश शब्द अंग्रेजी भाषा से हैं क्योंकि आधुनिक सभ्यता से संपृक्त बहुत-सी बातों का सीधा संबंध इस भाषा से है। कहीं-कहीं कुछ शब्द-समुच्चय या पूरा जुम्ला भी दिया गया है।

गार्जियन ट्युटर, मोज़ेइक फर्श, ब्यूक ‡गाड़ी का नाम‡, युडीकोलोन, एंग्लोइंडियन नर्स, ड्राफ्ट्स, स्टेनो, टीन-एजर्स, ड्रायमार्टिनी, ड्राइजिन, लौंग ब्राण्डी, शैम्पेन ‡शराब के नाम‡; रोस्ट मुर्ग, ड्रेस्डन चायना क्रोकरी, नीट जीन, परक्युलेटर, डनलोप की मैट्रेस, स्ट्राबेरी, क्रीडेन्शियल्स, एक्सेंट, नाईटी, कोर्टशिप, हनीमूनर, बहादुर ‡पहाड़ी नौकर‡, प्रिमरोज़ की बेल, मैनीक्युरर्ड नाखून, स्लीप आफ टंग, नाइलोन-डेक्रोन, डर्बी की लोटरी, डाक्यूमेण्टरी, अफेयर, सार्डिन मछली, ब्रिगेडियर, थ्री इन वन, वेज़-नौनवेज़, ब्रीफकेसनुमा बटुआ, पेराक्साइड, कार्डिगन, थेरामून, मोनोग्राम, सेलिब्रेट करना, इण्टीरियर, गेस्ट्रोएण्टेराइटिस, क्रिमेशन घाट, एल्सेशियन, क्रोस ब्रीड, मैग्निफाइंग ग्लास, न्यू पिंच, इंगेजमेण्ट रिंग, बिलियर्ड टेबल, स्टड का सेट, स्प्रे-वर्क; [73] आर्थराईटिस, स्वीज़ गवर्नेस, ~~xxx~~ पिगस्टिकिंग पार्टी, डक शूटिंग, मैटेनी, स्लिमिंग सेण्टर, फिक्सो, धूप का फैण्टम चश्मा, अनुबंध, पर्शियन बिल्ली, रैमनी स्कूल; डी.आई.जी., रेम्लर ‡गाड़ी का नाम‡, फियाट ‡गाड़ी का नाम‡, सनबाथ, कैम्ब्रिक का गाउन, आलिव आयल, ओह माय ब्यूटी, ओल्ड फ्लेम, डलोपमेण्ट, बुफो ‡ हेयर स्टाइल ‡, लकी बग, "शी डिसप्लेज हर न्यूडिटी फ्रोम आल साइड्स आफ द बोडी", फ्रस्ट्रेटेड, वारड्रोब, ट्वीड का कोट, स्केटिंग व्हील, एयरहोस्टेस, रिसेप्शनिस्ट, फारेन-एक्सचेंज, लौह पुरुष, प्राइवसी, डेलीशस, शैम्पेन, वैट सिक्स्टी नाइन ‡शराब‡, मिस युनिवर्स, काकटेल,

शिफोन-जार्जेट की इम्पोर्टेड साड़ियाँ, फोटोजेनिक चेहरा, ईडियट मातेश्वरी, परफ्यूम्स आफ अरेबिया, रोमाण्टिक गोताखोरी, सोमनम्बुलिस्ट, बैंमबर्ग जार्जेट, कैथोलिक नन्स, जीभ को किसी प्रकार की जिमनैस्टिक नहीं करनी पड़ती, अधरों की सील मोहर {चुंबन}, एरिस्टोक्रेटिक जोड़ा, क्लोरोफार्म, मैक्सफैक्टर का सुगन्धित पाउडर, टेनेण्ट, इम्प्रेस करना, क्रिमिनल लायर, ब्राईट फ्यूचर, न्यूसेन्स वैल्यू, सी आफ करना, स्मगल्ड पैकेट, लिपस्टिक, सर्चलाईट, वीसा ; [74] इण्टर्नशिप, एक्सपोज़ करना, डेलिकेट, एनजाइना {रोग}, डायाबीटिक, डनहिल की डिबिया, ग्रीन-कार्ड होल्डर, गीजर, गैस, माइक्रोवेव, सेंट्रल हीटिंग, प्रोम्पटिंग, साटन के पर्दे, वास्कट-स्वेटर, मोर्चरी, इलेक्ट्रिक क्रिमेटोरियम, ओवरकोट, ड्रेसिंग गाउन, स्केट, ब्लू ब्लेडेड, स्वीट हार्ट, सिरोसिस {रोग}, इलेक्ट्रिक शेवर, सिटिजनशिप, प्लीजेंट सरप्राइज़, मोर्निंग ट्रान्समिशन, इमोशनल लड़की, ट्रेक्लोथ टी कोजी से ढकी केतली, बेचमेट, फ्राइंग पैन, ट्रेशकैन, गेट वेल सून कार्ड, एंटी एलर्जी गोलियाँ, टर्टल नेक का स्वेटर, विश यु आल द बेस्ट, मिस करना, होमसिक फील करना, लवर्स-कोर्नर, सुपरफास्ट ट्रेन, जौगिंग, आँखों में कैटरैक्ट उतर आया है, डेस्पेंड, क्रोपलर, बायलोजिकल नेसेसिटी, ट्विन्स, स्लीवलेस ब्लाउज, फीरोजी औरगेंडी की साड़ी, वाकिंग ~~डिस्टेंस~~xx डिस्टैंस, जौंडिस, वार्निंग पार्टी, डी.डी.ए., एन्युअल फंक्शन, थ्री मस्केटियर्स, वोरस्टड की हाफ पैण्ट, ब्रीथ्ड हीज़ लास्ट, नथिंग डूइंग, ही नीड्स ए चेंज, मोनालिसा का विश्वविख्यात स्मित, बैजनाथ — देवताओं का समर-रिजोर्ट, हिप्नोटिक दृष्टि, श्वानिक {हमउम्र}, पोलियोग्रस्त, रैमनी कन्वेण्ट की प्राक्तन छात्रा, स्लीपिंग-बैग, एक्सलेटर, पाकिस्तानी सीरियल, नाइट-ड्यूटी । [75]

4.11 : विविध नामों से जुड़े हुए शब्द :

लेखिका के परिवेश से सम्बद्ध नामों का मिलना स्वाभाविक होगा । इस प्रकार के विशेष नाम या जातिवाचक नाम वा संज्ञा में

व्यक्तियों के नाम , xxxxx स्थलों के नाम , पेड़-पौधों और फूलों के नाम इत्यादि की परिगणना हो सकती है । व्यक्तियों के नाम से भी देशकाल का पता चलता है । विकासभाई , प्रकाशभाई , रमणभाई , छगनभाई , रमिलाबेन , पारुलबेन , मोनाबेन , शोभनाबेन जैसे नामों से ही उनके गुजरातीपन का बोध होने लगता है । उसी प्रकार मराठी , पंजाबी , बंगला आदि परिवेश के नाम भी कुछ भिन्नता लिए हुए रहते हैं । ठीक इसी तरह प्रदेश-विशेष के अनुसार जातियों के नाम भी पाये जाते हैं । पटेल , शाह , नागर , देसाई आदि सरनेम्स प्रायः गुजरातियों में पाई जाती है । "शाह" पंजाबियों तथा पहाड़ियों में भी मिलते हैं । गुप्ता , गोयल , शुक्ला , अग्रवाल , मिश्रा , तिवारी , श्रीवास्तव , दूबे , चतुर्वेदी , चौबे , सिंहा , यादव आदि जातिवाचक नाम हिन्दी-भाषी क्षेत्र के लोगों के होते हैं । नामों से न केवल स्थान , बल्कि काल का भी बोध होता है । पौराणिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं स्थानों के नाम से ही उनकी प्राचीनता का बोध होने लगता है । इधर पौराणिक नामों को पुनः धारण करने की प्रवृत्ति जो विकसित हो रही है , उससे आगे चलकर इस संदर्भ में मति-विक्षेप होने की संभावना है । संक्षेप में अभिप्राय यह कि विभिन्न नामों से उनके परिवेश का बोध होता है । शिवानीजी के उपन्यासों में कुमाऊं , बंगला , पंजाबी , गुजराती आदि परिवेश उपलब्ध होता है । नगरों में दिल्ली , कलकत्ता , बनारस , लखनऊ , बम्बई , राजकोट , अहमदाबाद , अल्मोड़ा , नैनि-ताल , हलद्वानी , हरद्वार , कानपुर आदि के संदर्भ उपलब्ध होते हैं । अधिकांश उपन्यासों में कुमाऊं प्रदेश (उत्तराखण्ड) के विभिन्न स्थानों का वर्णन मिलता है । अतः इस परिवेश से जुड़े हुए नाम हमें उनके उपन्यासों में मिलते हैं ।

सर्वप्रथम व्यक्तियों के नामों को लेते हैं । कालिन्दी , माधवी , अन्नपूर्णा , वसुधा , सुषमा , चम्पा , रत्ना , सुपर्णा , जूही , नरेन्द्र, गजेन्द्र , देवेन्द्र , रघुनाथ , रुद्रदत्त , शिवदत्त , मोतीराम , बसन्ती-लाल , नलिनी , पन्ना , माणिक , मुनीर इत्यादि नाम पहाड़ी परि-

वेश से जुड़े हुए हैं , तो कृष्णकली , वाणी सेन , विद्युतरंजन मजूमदार , प्रवीर , गजेन्द्रसिंह §गोजेन§ , मल्लिका , गगनेन्द्र , नारायण सेनगुप्ता, डा. मिनती घोष , द्विजेन्द्र भट्टाचार्य , डा. बसु , तिलोत्तमा देवी , चिन्मय लाहिड़ी , राजा सतीशदेव बर्मन , सुपर्णा , मिसेज दत्ता जैसे नाम अपने बंगाली परिवेश का परिचय कराते हैं । कुमाऊं प्रदेश के नामों में भी ग्रामीण एवं पिछड़ी जातियों के नामों में थोड़ी भिन्नता मिलती है । ऐसे नामों में खिमुली , भिमुली , बसुली , पस्ली आदि होते हैं । असदुल्ला , अहमद , तनवीर बेग , नहीद , सलमा , गौहरजान , मसूदअली , जहानआरा , आयशाबेगम , समरूबेगम , गुलशन , आबिद कुरेशी प्रभृति मुस्लिम परिवेश के नाम ; तो दूसरी तरफ लौरीन आण्टी , विवियन आण्टी , एल्फी , जैक , डा. पैट्रिक §रोजी§ , डिसूजा , मिस यंग , डा. शिला जोसेफ , डा. पैट्रिक डिसूजा , इलिजाबेथ रोड्रिक , फिलीप , रोबर्ट म्यूरी , डेस्डीमोना जैसे क्रिश्चियन परिवेश के नाम प्राप्त होते हैं । पंजाबी नामों में मिसेज खन्ना , मि. खन्ना , लोहनीजी , वेद , राज , सत्तो , अशोक §पंजाबियों में अशोक लड़कियों का नाम भी होता है§ , रत्तो , गुरविन्दर कौर , हरदयाल लोढ़ा , जस्टिस सप्रू , देवीलाल साहजी , करतारसिंह आदि प्राप्त होते हैं ; तो मराठी नामों में विनायक , आनंदीबाई , नंदी तर्दे , सखुबाई, अमिताभ कुलकर्णी , सौदामिनी पाटिल , डा. पाटकर आदि नाम ध्यान आकर्षित करते हैं ।

जातियों के नाम पर विचार करें तो पंत , पांडे , जोशी , भट्ट , शाह , तिवारी बिष्ट, अप्रेती §कुमाऊंनी§ ; मजूमदार , सेनगुप्ता , मित्रा , घोष , सान्याल , बर्मन , दत्ता , बसु , संथाल , सेन §बंगाली§ ; खन्ना , मलहोत्रा , भाटिया , दुआ §पंजाबी§ ; जोशी , पाटकर , पाटिल , कुलकर्णी §मराठी§ ; दारूवाला , बाटलीवाला §पारसी§ ; शाह , कापड़िया §गुजराती§ प्रभृति जातियों के नाम शिवानीजी के उपन्यासों में यत्र-तत्र पाये जाते हैं ।

स्थानों के नामों में दिल्ली , कलकत्ता , बनारस , अल्मोड़ा, नैनीताल , हरद्वार , हल्द्वानी , मुक्तेश्वर , कौसानी आदि के नाम तो आते ही हैं ; परंतु कुमाऊं प्रदेश के कुछ विशेष स्थलों की चर्चा भी उनके उपन्यासों के भौगोलिक-यथार्थ को रेखांकित करती है । ऐसे स्थानों में चित्तई , गोलगंगनाथ , गोल्ल गोरिलदेवता , जाखनदेवी , रानीखेत , बागेश्वर , पातालदेवी , खत्याड़ी , कनखल , हीराडुंगरी , खानड़ी , गागर , सै देवी , सिटौली , बल्टौली , बिनैक , भीमताल , धौला ओडयारी गुफा , कजरीवन [सिद्धों का आवास] , बदरीनाथ , केदारनाथ , टिहरी गढ़वाल , पाटिया , कसून , पिलिख , भैंसोड़ी , अनूपशहर , हथछिना , बैजनाथ [कार्तिकेयपुर] , दीदारगंज [यक्षिणी की मूर्ति के लिए प्रसिद्ध] , नंदादेवी , त्रिशूल, कामेत , चौखम्भा , दूनगिरि , बंदरपूंछ , स्वर्गारोहण, सतोपंथ , गंगोत्री, यमनोत्री , कर्क एण्ड टैम्पे , ब्राइटन कोर्नर आदि मुख्य रूप से आते हैं [76] ।

मैदानी वृक्षों और पहाड़ी वृक्षों में भी अंतर पाया जाता है । पहाड़ों में वहां की जलवायु के अनुसार वृक्ष होते हैं । इन वृक्षों में चीड़ , पाम , देवदार , बांज , बुरूंश , भोज , कैल , खरसू , शाल, हिंसालू , बादाम , चीलगौजे आदि मुख्य हैं । [77] पहाड़ी पक्षियों में पहाड़ी चिरैया , जूर्हो , सिटौल , घुघुती , तितुर , पहाड़ी कौआ , बतक , मुर्गाबियां आदि होते हैं ; जिनके नाम भी उनके उपन्यासों में यत्र-तत्र मिल जाते हैं । [78]

५.12 : विभिन्न विषयों से जुड़े हुए शब्द :

उपन्यास के सन्दर्भ में कहा जाता है — " ए नोवेल इज़ नोट मीअर ए स्टोरी , इट इज़ समथिंग बियोण्ड द स्टोरी । " [79] यह जो "कथा" के कुछ ऊपर होने की बात कही गई है , उसमें अनेक संभावनाएं निहित हैं । वस्तुतः उपन्यासकार कहानी के माध्यम से अनेक बातें अपने पाठक के सम्मुख रखता है । उसमें पाठक कथा के साथ-साथ अन्य कई विषयों का ज्ञान भी अर्जित करता चलता है ।

कार्ल मार्क्स ने बाल्ज़ाक के उपन्यासों के सन्दर्भ में यही तो टिप्पणी की थी कि मैं फ्रान्स को जितना वहां के समाजशास्त्रियों , इतिहासविदों, पुरातत्वविदों , अध्यापकों और चिन्तकों के द्वारा समझ पाया उससे कई गुना ज्यादा बाल्ज़ाक के उपन्यासों से समझा । [80] अभिप्राय यह कि उपन्यास के माध्यम से पाठक दूसरी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त करता है । शिवानीजी के उपन्यासों से हम कुमाऊं प्रदेश की अनेक ज्ञातव्य बातों को जान पाते हैं । यहां पर ऐसे कुछेक शब्दों को विश्लेषित किया गया है जो ज्योतिष , वैद्यकी , संगीत , पुरातत्व आदि से सम्बद्ध हैं । इससे यह प्रमाणित होता है कि शिवानीजी एक बहुश्रुत लेखिका है ।

ज्योतिषशास्त्र के विषय में वैसे तो उनके सभी उपन्यासों में कोई-न-कोई संदर्भ प्राप्त होते हैं , परन्तु"कालिन्दी" उपन्यास में इसकी विशेष चर्चा है , अतः यहां उसीसे ज्योतिष संबंधी कुछ शब्दों को लिया गया है । यथा — जन्मकुंडली , ग्रह , नक्षत्र , विक्रमार्क , शालिवाहन शके , मासोत्तम मासे पौषमासे , सिंह-लग्न , कुंडली की अग्निगर्भा स्वामिनी , जातक , दैवज्ञ , निर्बली ग्रह , सूर्यादि ग्रहों के स्वभाव , ऊर्ध्वगामी तोरण-दण्ड , ग्रहों का विकार , ग्रहों के वर्ण , ग्रहों के प्रभाव , वक्र-अनुवक्र ग्रहः,;आढ़क , द्रोण ,कुडव नायिका ; पारकाष्ठा , कला एवं ऋतु की परिभाषाएं ; मारक योग इत्यादि शब्द ज्योतिष-विद्या की ओर संकेत करते हैं ।[81]

इसी उपन्यास में वैद्यकी से सम्बद्ध कुछ शब्द भी प्राप्त होते हैं । यथा —मृत्युंजयी औषधियां , कुष्ठरोग , लौह , तुरवक , मल्लातक , बाकुची , गुग्गुल , चित्रक , माणीभद्र वटक योग , वमन , विरेचन, शिरोविरेचन , रक्तमोक्षण , रीठा , हरड , पिपर , मुरेठी ,आवलां , मुसाकंद , वासा , दारूहल्दी ,गुल्म बनफूसा , पाषाणभेद , जटामासी , रजनजोत , कर्णफूल , जड़ी बूटियां आदि आदि । [82]

संगीत के शब्द "कृष्णकली" , "श्मशानचम्पा" , "तर्पण" तथा "जोकर" आदि उपन्यासों में उपलब्ध होते हैं । यहां ऐसे कुछ शब्द

संकलित किए गए हैं ।

संगीतानुष्ठान , रवीन्द्रालय , उग्रतेजी कंठ , गरिष्ठ संगीत , परिवेशना , स्वरलयनटिनी , भजन , ठुमरी , खंजड़ी , कीर्तन का अन्दाज़ , श्यामा संगीत की करुण लहरी , टप्पे का दुर्दर्ष कंपन , टैगोर्स स्कूल , देवदत्त प्रतिभा , विलक्षण कण्ठ की बाजीगरी , राग धानी , शुद्ध नट , कौसी कान्हड़ा , कण्ठामृत ; [83] ब्राह्मोत्सव , माधोत्सव , रवीन्द्र संगीत , मीठे स्वर का सधा आरोह , अवरोह की सोपान पंक्तियां , स्वाभाविक मुरकियां , " गोरी तोरे नैन / बिन काजर कजरारे " ‖ठुमरी‖ , स्वरलयनटिनी , शहनाई की-सी बुलन्द गूंज की नौबत , " गाड़ीवारे मसक दे बैल / चले पुरवैया के बादर " में बादर का "र" एक मोहक सधी मरोड़ के साथ मुड़ता ; छठी-दष्टोन-चुड़चढ़ी के गीत , पार्श्वगायिकाएं , तारसप्तक , अतुलप्रसाद और रवीन्द्रनाथ का सुमधुर संगीत ; राजेश्वरी दत्ता , कनिकादेवी , सुचित्रा मित्रा ‖रवीन्द्र संगीत की सुप्रसिद्ध गायिकाएं‖ ; " जोबनवा के सब रस / ले गइले भंवरा / गूंजी रे गूंजी " ‖ एक गीत ‖ , आवाज़ की मोहक गूंज , टप्पा-ठुमरी , "प्रभाते उठिया जे मुख हेरि तु / दिन जाबे आजी भालो " ‖ चण्डीदास का एक गीत ‖ , ध्रुपद-धमार , रघुनंदन आनंदकंद की चाकरी , "चाकर रहसूं , बाग लगासूं , नित उठ दरसन पासूं / वृन्दावन की कुंजगलिन में तेरी लीला गासूं / म्हाने चाकर राखोजी " ‖मीरांबाई का एक गीत‖ , काल्पनिक करताल , गोविन्ददासी , संगीतशिल्पान्विता , लांग प्लेयिंग रिकार्ड , प्रौढ़ा-स्वरलयनटिनी , रियाज़ , आसन्नप्राय मृत्यु की सारंगी ही उसे जवाबी संगत दे रही थी , हंसी का उज्ज्वल तारसप्तक । [84]

इसी प्रकार इतिहास , पुरातत्व , पुराण , मेडिकल सायन्स आदि विषयों से संपृक्त अनेक शब्द भी शिवानीजी के उपन्यासों में उपलब्ध होते हैं ।

4.13 : गुजराती से मिलते-जुलते शब्द :

पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि कुमाऊंनी और

गुजराती [विशेषतः गुजराती का "कोलोक्युअल" रूप] के अनेक शब्दों में आश्चर्यकारक समानता लक्षित होती है । वैसे तो गुजराती भी संस्कृत से निःसृत हुई है , अतः उसमें ऐसे कई शब्द हैं जो हिन्दी में प्राप्त होते हैं , परंतु यहां ऐसे सर्व-सामान्य शब्दों को न लेकर कुछ विशिष्ट प्रकार के शब्दों को ही लिया गया है । सुविधा के लिए गुजराती शब्दों को कोष्ठक में रखा गया है । यथा —

बिरावल /वेरावळ/ , नौशा /नौशो/ , हुंकारा /हुंकारो/, भौनिया /भोनियो/ , नहान /न्हान/ , सूतक / सूतक / , पंचक /पंचक / , मरी /मरी/ , छोकरी /छोकरी / , फिराक /फराक/ , बाउचर /वाउचर/ , जोगाड़ /जुगाड़/ , हे मां दुग्गा छीमा कौरो / हे मां दुर्गा क्षमा करो / , कलिया /कोळियो / , देबुली /देवली/, शिबिया / शिविया/ , शकुन /शुकन / , चानमार /चांदमार/ , कक्का /काका/ , जंवैज्यु / जमइ/ , चाय-शाय /चाय-बाय/ , काखी /काकी , काची — यह रूप पिछड़ी ग्रामीण जातियों में अधिक प्रचलित है / , अबेर / वेरा / , माशी /मासी-माशी / , थुड़ी-थुड़ी होना /थू-थू थवु / , फुमफइजी /फुफाजी/ , गोश्त /गोस / , रोहू मछलियां / रो माछलीओ/ , मोयन / मोवण / , पोटली /पोटली/ ,[85] धोबन /धोवण/ , अदहन /आंधण/ , बामण /बामण/ , बालों का पकना /वाळ पाकवा / , उधाना /उधरावववुं-उधराणी/ , पुआल /परार/ , ओड /ओड/ , बल्द /बळद/ , बालना ~~/xxxxxx/~~ /बाळवो/, जामिर /जांबु/ , खबीस /खविश/ , देवथान /देवस्तान/ , डिप्टी /डिपोटी / , दाज्यू /दाजी/ , कठौती /कथरोट / , जेठज्यू /जेठजी/, दुरजोधन /दुरजोधन / , भड़भूजी /भडभूजो / , चड़ी /छड़ी / , सरग /सरग/ , मिट्टी / माटी — मानव-शरीर के अर्थ में / , असौज /आसो/ , नोर्ते /नोडतां/ , पहुंची /पोंची-एक गहना/ , लार /लाळ/ , टोली /टोली/ , सैप /साब/ , अलक्षिणी /अलछनी/ , भंड /भांड/ , सकोरा /शकोरुं/ , भांजी मारना / भांजी मारवी /, बिलैती /विलायती/ ।[86]

4.14 : निष्कर्ष :

समग्र अध्याय के पुनरावलोकन के पश्चात् हम निम्नलिखित निष्कर्षों तक पहुंच सकते हैं :—

§1§ उपन्यासकार का संबंध मुख्यतया मुखबोलन्ती भाषा से होता है । शिवानीजी के उपन्यासों से यह लक्षित होता है कि उनका इस भाषा के मौखिक रूप पर खासा अधिकार है ।

§2§ शिवानीजी के उपन्यासों में हमें संस्कृत , अरबी-फारसी, अंग्रेजी , बंगला , गुजराती , पंजाबी , आदि भाषाओं के तथा कुमाऊंनी और ब्रज प्रभृति बोलियों के शब्द उपलब्ध होते हैं । इन भाषाओं तथा बोलियों के शब्दों का लेखिका ने सार्थक एवं सशक्त प्रयोग किया है ।

§3§ कुमाऊंनी बोली के कतिपय शब्दों से वहां की सभ्यता, संस्कृति तथा तीज-त्योहारों तथा मानयताओं का ज्ञान भी होता है ।

§4§ शिवानीजी ने संस्कृत तत्सम शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग किया है , तथापि तद्भव एवं देशज शब्दों की विशेष छटा भी उनके यहां मिलती है ।

§5§ शब्दों के नवीन प्रयोगों में शिवानीजी को विशेष महारत हासिल है । शब्द-प्रेमी पाठकों को उसमें एक विशिष्ट प्रकार का आनंद आ सकता है ।

§6§ शिवानीजी के उपन्यासों में हमें वर्णमैत्री वाले शब्द , ध्वन्यात्मक-शब्द तथा ध्वनि-पुनरावर्तन से संपृक्त शब्दों के विशेष प्रयोग प्राप्त हो सकते हैं ।

§7§ आधुनिक काल में अंग्रेजी की तुक पर अनेक शब्दों का हिन्दीकरण हुआ है । शिवानीजी की भाषा में भी ऐसे कई शब्द प्राप्त होते हैं । इस प्रकार उन्होंने हिन्दी की शब्द-संपदा को अधिक संपन्न करने का कार्य भी किया है ।

§8§ आधुनिक सभ्यता के कारण हमारी भाषा में अनेक

नये शब्द , विशेषतः अंग्रेजी के आये हैं । शिवानीजी के उपन्यासों का परिवेश भी प्रायः आधुनिक पात्रों से सम्बद्ध होने के कारण उनमें इस प्रकार के शब्दों की बहु बहुतायत लक्षित होती है जिनका इस सभ्यता से सीधा संबंध है ।

§9§ शिवानीजी की भाषा में हमें ऐसे अनेक नये शब्द प्राप्त होते हैं जो विभिन्न स्थानों से जुड़े हुए हैं । उसमें विविध पेड़-पौधे , व्यंजन , परिधान , ज्योतिष , संगीत , विज्ञान आदि से संपृक्त शब्द भी पाये जाते हैं ।

§10§ कुमाऊंनी के कई शब्दों का गुजराती भाषा के शब्दों से मेल खाना , भाषा-वैज्ञानिकों के लिए अभिरूचि का विषय हो सकता है ।

====== XXXXXXX =======

:: सन्दर्भिका ::

§1§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : पृ. 22 ।

§2§ द्रष्टव्य : वही : पृ. 29 ।

§3§ सूखे सेमल के वृन्तों पर : डा. पारूकांत देसाई : पृ. 11 ।

§4§ द्रष्टव्य : चिंतनिका : डा. पारूकांत देसाई : पृ. 16 ।

§5§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 3, 3, 4, 4, 7, 10, 13, 14, 15, 15, 16, 17, 19, 25, 26, 28, 30, 52, 60, 65, 78, 86, 88, 100, 109, 125, 133, 134, 141, 161, 163, 163, 164, 169, 172, 178, 179, 179, 199, 209, 220, 226 ।

§6§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 1, 1, 1, 1, 1, 2, 2, 3, 5, 9, 16, 18, 19, 27, 27, 27, 27, 27, 29, 32, 42, 49, 58, 61, 76, 95, 95, 109, 117, 130, 150, 166, 194, 208, 213, 216 ।

§7§ भैरवी : पृ. क्रमशः 5, 7, 8, 7, 8, 13, 15, 16, 18, 19, 8, 39, 39, 40, 53, 65, 65, 71, 70, 72, 73, 73, 73, 73, 85, 85, 86, 88, 92, 94, 94, 101, 117, 123, 124, 129, 129, 129, 89 ।

§8§ विषकन्या : पृ. क्रमशः 8, 8, 11, 21, 25, 36, 43, 57 ।

§9§ माणिक : पृ. क्रमशः 9, 9, 10, 11, 11, 12, 12, 15, 17, 17, 20, 21, 28

§10§ तर्पण : 50, 52, 53, 58, 78, 78, 83 ।

§11§ जोकर : पृ. क्रमशः 84, 84, 86, 91, 92, 95, 100 ।

§12§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 15, 20, 24, 29, 30, 80, 129, 134, 195, 180 ।

§13§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 2, 10, 19, 19, 23, 23, 23, 49, 58, 68, 75, 84 84, 168, 169, 169, 175, 175, 177, 178, 186 ।

§14§ मायापुरी : पृ. क्रमशः 65, 51, 51, 50, 69, 72, 81, 105, 123, 156, 169 ।

§15§ श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 12, 43, 60, 63, 63, 114, 123 ।

§16§ भैरवी : पृ. क्रमशः 16, 32, 21, 39, 5, 12, 65, 71, 75, 87, 94 ।

§17§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 7, 11, 21, 21, 37, 38, 42, 51, 72, 76, 81, 140, 156, 183 ।

§18§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 3, 8, 10, 16, 18, 26, 53, 60, 62, 65, 70, 71, 80, 82, 82, 82, 84, 95, 95, 99, 104, 105, 111, 113, 120, 121, 124, 125, 132, 132, 139, 143, 145, 146, 146, 146, 151, 158, 162, 163, 170, 170, 170, 170, 170, 170, 172, 172, 173, 174, 181, 182, 183, 183, 184, 185, 186, 212, 212, 213, 214, 215, 219, 220, 225, 226, 226, 226, 226 ।

§19§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 1, 3, 17, 26, 26, 26, 26, 28, 28, 28, 28, 30, 30, 30, 31, 32, 33, 34, 34, 40, 40, 41, 42, 42, 43, 44, 45, 45, 45, 45, 45, 45, 46, 50, 52, 55, 58, 60, 60, 60, 69, 69, 80, 82, 82, 88, 102, 108, 121, 124, 125, 125, 126, 131, 132, 133, 133, 134, 139, 139, 140, 142, 142, 137, 142, 144, 143, 142, 142, 144, 144, 145, 145, 145, 146, 147, 149, 149, 149, 157, 171, 177, 177, 178, 181, 191, 196, 196, 198, 177, 200, 200, 207, 208, 209, 209, 209, 210, 210, 210, 210, 223 ।

§20§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 16, 16, 31, 85, 159, 159, 159, 159, 159, 166, 171, 180, 180, 185, 160, 160, 160, 33, 33, 34, 34, 34 ।

§21§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 39, 39, 48, 48, 48, 75, 95, 95, 96, 126, 127, 127, 128, 128, 149, 183 ।

§22§ द्रष्टव्य : भाषाविज्ञान : डा. भोलानाथ तिवारी : पृ. 182 ।

§23§ द्रष्टव्य : "शैलेश मटियानी का कथा-साहित्य" : डा. सलीम व्होरा : शोध-प्रबंध : म.स. विवि. : पृ. 334-335 ।

§24§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 8, 14, 15, 51, 57, 109, 134, 180, 195, 197, 199, 211, 32 ।

§25§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 6, 7, 11, 2, 7, 8, 9, 23, 28, 29, 48, 71,

75. 75, 84, 111, 116, 117, 215 ।

§26§ विषकन्या : पृ. क्रमशः 24, 31, 57 ।

§27§ मासिक : पृ. क्रमशः 9, 12, 12, 15, 30 ।

§28§ तर्पण : पृ. क्रमशः 60, 61, 61, 62, 66, 70, 81 ।

§29§ जोकर : पृ. क्रमशः 87, 8* 91, 95, 100 ।

§30§ श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 26, 39, 63, 65, 94, 90, 86, 107, 110, 112, 117 ।

§31§ भैरवी : पृ. क्रमशः 5, 5, 6, 7, 22, 24, 27, 26, 28, 37, 39, 46, 46, 53, 55, 57, 66, 66, 67, 67, 67, 67, 68, 68, 68, 71, 77, 94, 97, 97, 105, 106, 107, 110, 111, 118 ।

§32§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 11, 13, 7, 7, 7, 8, 10, 11, 13, 13, 13, 14, 14, 43, 55, 55, 55, 56, 59, 62, 62, 65, 64, 68, 68, 68, 70, 71, 75, 75, 77, 83, 84, 85, 85, 86, 86, 88, 89, 95, 93, 101, 109, 109, 110, 117, 121, 124, 151, 173, 174, 190, 190, 215, 215, 215, 215 ।

§33§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 19, 20, 29, 30, 32, 32, 33, 34, 36, 37, 37, 38, 44, 51, 51, 52, 52, 52, 52, 52, 53, 52, 53, 53, 54, 54, 55, 55, 56, 56, 56, 56, 57, 58, 59, 59, 59, 59, 60, 61, 61, 62, 63, 69, 72, 72, 73, 73, 74, 76, 77, 80, 80, 80, 81, 81, 81, 81, 82, 83, 83, 85, 85, 85, 88, 88, 89, 90, 96, 97, 98, 99, 99, 101, 103, 103, 105, 105, 105, 106, 107, 107, 111, 112, 112, 113, 113, 113, 114, 114, 115, 148, 149, 149, 149, 149, 150, 150, 150, 151, 152, 152, 156, 158, 160, 161, 168, 170, 170, 174, 187, 189, 190, 193, 198, 198, 201, 201, 202, 203, 203, 215, 204 ।

§34§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 11, 1, 7, 16, 18, 27, 29, 32, 19, 51, 51, 52, 58, 60, 61, 65, 75, 81, 84, 84, 91, 93, 108, 122, 126, 127, 130, 132, 191, 194, 211, 212, 213 ।

§35§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 3, 15, 18, 22, 44, 57, 62, 80, 95, 110,

125, 130, 135, 137, 156, 160, 163, 172, 179, 190, 201, 204, 213, 220, 226 ।

§36§ वही : पृ. क्रमशः 8, 51, 88, 105, 105, 106, 134, 161, 197, 117, *8× 150, 150, 154, 157, 159, 159, 166, 196, 204, 211 ।

§37§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 6, 11, 5, 16, 48, 49, 50, 49, 54, 84, 122, 129, 215 ।

§38§ श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 32, 77, 77, 80, 81, 83, 94, 102, 114, 85, 83, 85, 115 ।

§39§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 7, 10, 8, 12, 15, 20, 21, 21, 26, 27, 28, 29, 29, 32, 44, 53, 52, 62, 67, 71, 72, 103, 107, 110, 114, 114, 132, 135, 155, 157, 158, 159, 168, 169, 170, 174, 189, 190, 197, 224, 224 ।

§40§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : डा. पारूकांत देसाई : पृ. 30 ।

§41§ अन्धेरे बन्द कमरे : मोहन राकेश : पृ. 273 ।

§42§ परिधि पर स्त्री : मृणाल पांडे : पृ. 17 ।

§43§ वही : पृ. क्रमशः 34, 34, 35, 36, 40, 41, 42 ।

§44§ कृष्णकली : पृ. 227 ।

§45§ वही : पृ. क्रमशः 6, 7, 10, 23, 38, 38, 80, 82, 88, 89, 91, 90, 97, 116, 121, 135, 155, 156, 175, 178, 178, 179, 179, 181, 194, 198, 202, 210, 211, 212, 214, 217, 217, 221, 221, 226 ।

§46§ माणिक : पृ. क्रमशः 9, 10, 10, 11, 11, 15, 15, 17, 19, 20, 26, 26, 8 28, 30, 31, 34, 35, 41, 42, 48 ।

§47§ तर्पण : पृ. क्रमशः 49, 51, 52, 56, 59, 59, 60, 60, 60, 60, 62, 62, 64, 65, 65, 66, 73, 74, 75, 83 ।

§48§ जोकर : पृ. क्रमशः 84, 85, 85, 86, 87, 90, 90, 92, 94, 93, 95, 97, 101, 100, 106 ।

§49§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 1, 8, 13, 27, 32, 43, 47, 95, 196, 196, 166 ।

§50§ द्रष्टव्य : समीक्षायण : डा. पारूकांत देसाई : पृ. 159 ।

§51§ वही : पृ. 36 ।

§52§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 3, 3, 4, 8, 9, 12, 14, 19, 26, 26, 26, 27, 27, 27, 27, 29, 32, 40, 42, 44, 50, 51, 56, 72, 81, 82, 84, 84, 84, 84, 93, 93, 111, 117, 156, 157, 159, 163, 215, ।

§53§ विषकन्या : पृ. क्रमशः 8, 10, 10, 18, 18, 19, 36, 40, 49, 56 ।

§54§ तर्पण : पृ. क्रमशः 54, 61, 68, 76, 76, 79 ।

§55§ जोकर : पृ. क्रमशः 103, 86, 88, 90, 97, 101, 100 ।

§56§ कस्तूरी मृग : पृ. क्रमशः 10, 16, 28, 19, 27, 28, 30, 33, 38 ।

§57§ श्मशान चम्पा : पृ. क्रमशः 14, 15, 17, 19, 20, 24, 26, 26, 27, 30, 31, 32, 34, 43, 55, 57, 63, 76, 77, 77, 85, 89, 107, 108, 111, 114, 116, 123, 125, 129 ।

§58§ भैरवी : पृ. क्रमशः 30, 6, 21, 36, 38, 44, 73, 75, 80, 81, 83, 88, 89, 90, 94, 95, 114, 6, 17, 18, 19, 23, 32, 34, 37, 41, 46, 49, 51, 66, 72, 73, 79, 84, 88, 112, 131, 132 ।

§59§ द्रष्टव्य : भाषाविज्ञान : डा. भोलानाथ तिवारी : पृ. 41 ।

§60§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 180, 195, 33, 109, 137, 160, 175, 211, 211, 213, 217, 218, 222, 223, 226, 168 ।

§61§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 9, 93, 104, 28, 47, 55, 56, 57, 61, 60, 81, 93, 113, 121, 137, 143, 169, 170, 171, 174, 191, 215, 225 ।

§62§ वही : पृ. क्रमशः 5, 12, 141, 141, 29, 158, 10, 30, 37, 56, 62, 68, 82, 97, 97, 126, 129, 171, 172, 173, 174, 174, 191, 215 ।

§63§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 20, 24, 54, 56, 57, 94, 99, 133, 139, 151, 163, 181, 183, 200, 210, 210, 213, 217, 217 ।

§64§ भैरवी : पृ. क्रमशः 14, 15, 45, 57, 58, 60, 60, 72, 72, 72, 72, 73, 75, 77, 78, 86, 89, 91, 93 ।

§65§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 7, 8, 22, 28, 40, 44, 50, 51, 53, 53,

56, 57, 57, 59, 59, 61, 61, 68, 75, 76, 85, 107, 108, 110, 114, 117, 117, 118, 119, 142, 145, 148, 151, 156, 160, 169, 170, 186, 186, 201, 201, 208, 213, 217, 221 ।

§66§ कस्तूरी मृग : पृ. 13 ।

§67§ कालिन्दी : पृ. 55 , 191 ।

§68§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 77, 78, 95, 125, 200, 220 ।

§69§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 1, 16, 18, 31, 56, 216, 223 ।

§70§ माणिक : पृ. क्रमशः 11, 11, 12, 15, 17, 20, 17 ।

§71§ मायापुरी : पृ. क्रमशः 83, 25, 64, 99 ।

§72§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 34, 55, 65, 67, 129, 130 ।

§73§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 6, 1, 17, 26, 26, 28, 30, 32, 32, 33, 40, 41, 52, 55, 58, 60, 76, 82, 82, 87, 102, 108, 117, 120, 121, 125, 125, 131, 137, 141, 137, 143, 144, 145, 149, 177, 177, 177, 177, 181, 191, 207, 209, 210 ।

§74§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 8, 18, 18, 53, 62, 65, 65, 70, 77, 82, 84, 88, 91, 91, 92, 95, 95, 96, 99, 99, 101, 102, 105, 106, 111, 111, 112, 125, 125, 125, 131, 136, 138, 139, 166, 170, 170, 172, 174, 177, 181, 180, 182, 186, 187, 196, 198, 204, 206, 210, 212, 213, 214, 214, 214, 225, 227 ।

§75§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 22, 25, 25 , 27, 27, 37, 48, 50, 50, 56, 56, 57, 58, 60, 64, 64, 73, 73, 73, 75, 75, 76, 78, 90, 92, 92, 93, 97, 98, 101, 102, 104, 104, 106, 106, 109, 117, 117, 119, 127, 127, 127, 127, 128, 129, 130, 130, 134, 136, 137, 138, 139, 139, 140, 142, 142, 142, 147, 146, 164, 170, 175, 191, 203, 203, 214, 214 ।

§76§ द्रष्टव्य : कालिन्दी : पृ. क्रमशः 50, 52, 57, 60, 75, 76, 80, 91, 142, 143, 147, 151, 160, 161, 164, 169, 205 ।

§77§ कालिन्दी : पृ. 144- 55 ।

§78§ चौदह फेरे : पृ. 93 ।

§79§ डा. शिशिर चट्टोपाध्याय : द टेकनिक आफ मोडर्न इंग्लिश नोवेल : पृ. 18 ।

§80§ डा. शिवदानसिंह चौहान : "एक पंखुड़ी की तेज़धार -" की समीक्षा : जनयुग : 6-2-1966 ।

§81§ कालिन्दी : पृ. 15-21 ।

§82§ वही : पृ. 197-201 ।

§83§ जोकर : पृ. क्रमशः 84, 84, 84, 85, 85, 85, 85, 87, 87, 87, 87, 88, 90, 90, 97, 97, 100 ।

§84§ कृष्णकली : पृ. क्रमशः 16, 16, 16, 29, 29, 29, 44, 44, 100, 100, 134, 134, 134, 134, 134, 150, 150, 150, 175, 204, 205, 205, 205, 205, 221, 221, 222, 222 ।

§85§ चौदह फेरे : पृ. क्रमशः 7, 11, 12, 13, 5, 8, 8, 10, 18, 18, 28, 29, 33, 39, 49, 54, 59, 69, 83, 85, 88, 101, 104, 121, 123, 154, * 168, 208, 214, 215 ।

§86§ कालिन्दी : पृ. क्रमशः 178, 66, 72, 145, 148, 198, 198, 202, 44, 51, 51, 51, 52, 53, 55, 64, 71, 73, 101, 110, 112, 113, 113, 113, 146, 150, 150, 157, 161, 168, 186, 199 ।

===== xxxxxx =======